30 अहादीसे मुबा-रका और उन की मुख़्तसर वज़ाहत पर मुश्तमिल तालीफ़

Ahadeese Mubaraka ke Anwar (Hindi)

अहादीसे मुबा-रका के अन्वार

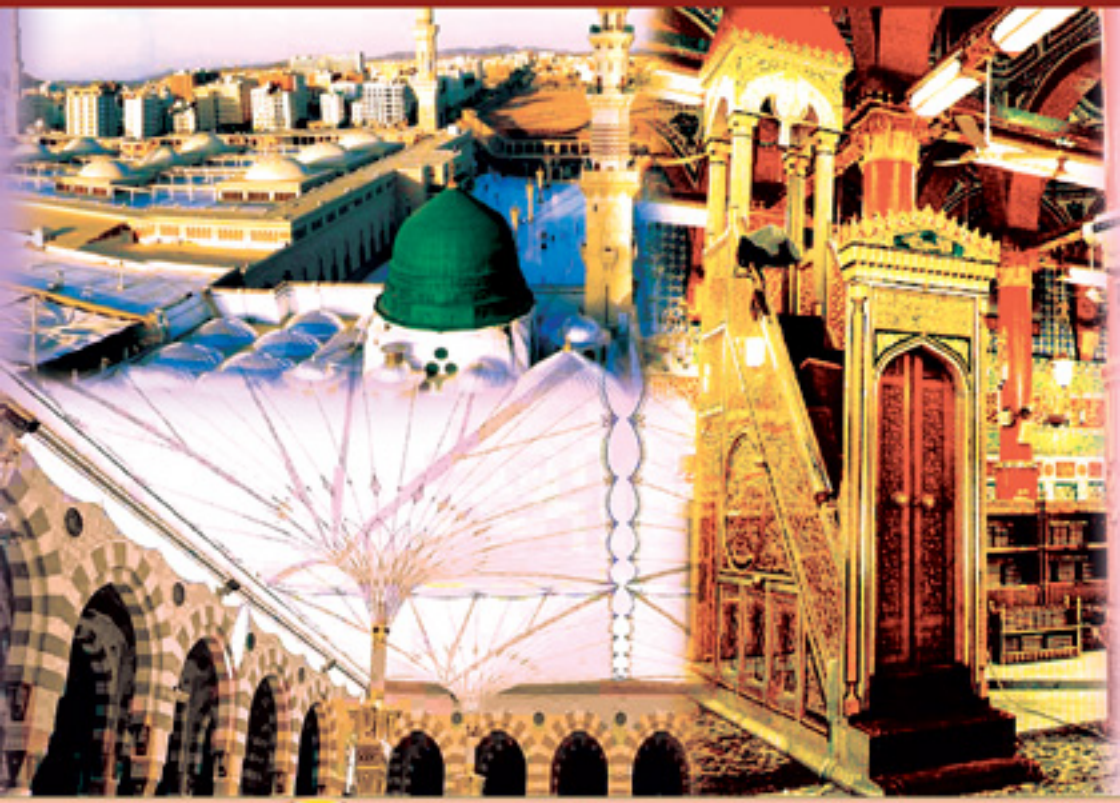

पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए इस्लाही कुतुब

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com,

www.dawateislami.net

30 अह़ादीसे न-बवी और उन की मुख़्तसर वज़ाह़त पर मुश्तमिल तालीफ़

अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार

: पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلیٰ الک واصحابک یاحبیب اللہ

नाम किताब : अह़ादीसे मुबा-रका के अन्वार

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाही़ कुतुब) (दा'वते इस्लामी)

सिने त़बाअ़त : मुहर्रमुल हराम सिने 1430 हिजरी

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अह़मद आबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20 मुह़म्मद अ़ली बिल्डिंग, मुह़म्मद अ़ली रोड,
फ़ोन : 022-23454429

देहली : मटिया मह़ल, उर्दू मार्केट, जामेअ़ मस्जिद
फ़ोन : 011-23284560

कानपूर : मख़्दूम सिम्नानी मस्जिद, दीप्ती पांडव का चौराहा, नज़्द गुर्बत पार्क,यूपी, फ़ोन : 09415982471

नागपुर : (C/0) जामिअ़तुल मदीना,मुह़म्मद अ़ली सराय रोड, कमाल शााहबाबा दरगाह के पास मोमिनपुरा
फ़ोन : 0712 -2737290

अजमेर शरीफ : 19 / 216 फलाहे़ दारैन मस्जिद. नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385

तम्बीह : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

''अहादीसे मुबा-रका के अन्वार'' के **19** हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की **''19 निय्यतें''**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه۰ मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(अल मो'जमुल कबीर लित्त-बरानी, अल ह़दीस **:** 5942, जि. 6, स. 185)

दो म-दनी फूल : (1) बग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअव्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता-लआ़ करूंगा। (6) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (7) क़िब्ला रू मुता-लआ़ करूंगा। (8) कु़र्आनी आयात और (9) अहादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (10) जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (11) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढूंगा। (12) (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा। (13) (अपने ज़ाती

नुस्ख़े पर) ''याद दाश्त'' वाले स-फ़ह़ा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (14) दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करूंगा। (15) म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल करते हुए इस का कार्ड भी जम्अ़ करवाया करूंगा। (16) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। (17,18) इस ह़दीसे पाक ''تَهَادَوْا تَحَابُّوْا एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।'' (मुअत्ता इमाम मालिक, जि. 2, स. 407, अल ह़दीस : 1731) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। (19) किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्तलअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मु-तअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान ''**निय्यत का फल**'' और निय्यतों से मु-तअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** या **पेम्फ़लेट मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन ह़ासिल फ़रमाएं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ، وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ،
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ،

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़् : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला हज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़् क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

'' अल मदीनतुल इल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

तमाम ख़ूबियां अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला को शायां और बे शुमार दुरूद हमारे आक़ा व मौला रसूले मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कि जिन का दामने करम हमारे हाथों में आया । जिन के सदक़े इस्लाम मिला, क़ुरआन मिला अपने रब عَزَّوَجَلَّ की पहचान नसीब हुई । जिन के बारे में अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : مَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ तुम्हें रसूल अ़ता फ़रमाएं वोह लो और जिस से मन्अ़ फ़रमाएं बाज़ रहो । (पारह : 28, अल ह़श्र : 7)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज दा'वते इस्लामी 30 से ज़ाइद शो'बों में सुन्नतों की ख़िदमत कर रही है, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के फ़ैज़ान से दीगर शो'बाजात के साथ साथ ता'लीमी इदारों म-सलन दीनी मदारिस, स्कूल्ज़, कॉलेजिज़ और यूनिवर्सिटीज़ के असातिज़ा व त़-लबा को **मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से रू शनास करवाने के लिये **''मजलिस बराए शो'बए ता'लीम''** के तह़्त म-दनी काम हो रहा है । बे शुमार तु-लबा सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिरकत करते हैं नीज़ म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर भी बनते रहते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मु-तअ़द्दद** दुन्यवी उ़लूम के दिलदादा बे अ़मल त़-लबा, नमाज़ी और सुन्नतों के आ़दी हो गए । स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के त़-लबा, असातिज़ा और स्टाफ़ को ज़रूरियाते दीन से रू शनास करवाने के लिये अपनी नौइय्यत का मुन्फ़रिद **''फ़ैज़ाने क़ुरआनो**

हदीस कोर्स'' भी शुरूअ किया गया है, इस्लामी बहनों में भी येह कोर्स जारी है। ज़ेरे नज़र किताब **''अहादीसे मुबा-रका के अन्वार''** को बिल खुसूस इसी कोर्स के लिये तरतीब दिया गया है लेकिन दीगर इस्लामी भाइयों के लिये भी इस का मुता-लआ यक़ीनन मुफ़ीद है। इस किताब का उस्लूब कुछ यूं है :

(1) तीस अहादीस का तरजमा और इस की वज़ाहत लिखी गई है।

(2) अहादीस का तरजमा और इस की वज़ाहत हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عليه رحمة الله الغنى की शर्हे मिश्कात मिरआतुल मनाजीह से लिया गया है।

(3) किताब में फ़क़त तरजमा और उस के मुताबिक़ तशरीह का इल्तिज़ाम किया है मज़ीद कलाम नहीं किया गया ताकि पढ़ने वाला नफ़्से हदीस को ब आसानी समझने में काम्याब हो सके।

(4) तमाम अहादीस का हवाला मिश्कातुल मसाबीह मत्बूआ दारुल कुतुबुल इल्मिय्या बैरूत से दिया गया है।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश''** करने के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अमल और **म-दनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अता फ़रमाए।

امین بجاہِ النّبیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

शो'बए इस्लाही कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

(दा'वते इस्लामी)

फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा	नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़ह़ा
1	मस्जिद आबाद करने की फ़ज़ीलत	10	19	रियाकारी और दिखलावे की बुराई	46
2	ईमान व इस्लाम की ता'रीफ़	11	20	शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم	48
3	इस्तिग़्फ़ार व तौबा की अहम्मिय्यत	19	21	अरकाने इस्लाम	52
4	मो'जिज़ाते रसूल صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَسَلَّم	20	22	निय्यत की अहम्मिय्यत	54
5	मनाक़िबे अ़ली رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ	23	23	अ़क़ीक़े का बयान	55
6	मनाक़िबे उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ	25	24	ह़या की फ़ज़ीलत	56
7	मनाक़िबे अहले बैत رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ	26	25	ई फ़ ाए अ़ हद	58
8	दम करना जाइज़ है	28	26	फ़ख़्र की मज़म्मत	60
9	ज़ब ान की हि़फ़ाज़त	30	27	बिदअ़त की ह़क़ीक़त	61
10	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत की ब-र-कत	31	28	दुआए बा'दे नमाज़े जनाज़ा का हुक्म	63
11	कस्बे ह़लाल की अहम्मिय्यत	34	29	ग़ीबत की बुराई	64
12	ग़सब की मज़म्मत	35	30	अ़लामाते मुनाफ़िक़	66
13	फ़ज़ीलते मदीना	36	31	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब	71
14	हुक़ूक़े मुस्लिम	38			
15	फ़ज़ाइले क़ुरआन	40			
16	फ़ज़ीलते इ़ल्मे दीन	42			
17	तवक्कुल व सब्र का बयान	43			
18	अ़लामाते क़ियामत	44			

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِالْمُرْسَلِيْنَ ۙ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ۙ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ۙ

(1) मस्जिद आबाद करने की फ़ज़ीलत

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ أَوْ رَاحَ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُ نُزُلَهُ مِنَ الْجَنَّةِ كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ-

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुस्सलाह, बाबुल मसाजिद, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 698, जि. 1, स. 148)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अबू हुरैरा से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कि जो शख़्स सुब्ह़ या शाम मस्जिद को जाए जब कभी सुब्ह़ या शाम जाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत की मेहमानी का सामान बनाएगा ।

वज़ाह़त :

सुब्ह़ व शाम से मुराद हमेशगी है या'नी जो हमेशा नमाज़ के लिये मस्जिद में जाने का आ़दी होगा उसे हमेशा जन्नती रिज़्क़ मिलेगा । نُزُل उस खाने को कहते हैं जो मेहमान की ख़ातिर पकाया जाए चूंकि वोह पुर तकल्लुफ़ होता है और मेज़बान की शान के लाइक़ । इस लिये जन्नती खाने को نُزُل फ़रमाया गया वरना जन्नती लोग वहां मेहमान न होंगे मालिक होंगे ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 433 ता 434)

(2) ईमान व इस्लाम की ता'रीफ़

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ قَالَ بَیْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ ذَاتَ یَوْمٍ إِذْ طَلَعَ عَلَیْنَا رَجُلٌ شَدِیدُ بَیَاضِ الثِّیَابِ، شَدِیدُ سَوَادِ الشَّعرِ، لَا یُرَی عَلَیْہِ أَثَرُ السَّفَرِ، وَلَا یَعْرِفُہُ مِنَّا أَحَدٌ، حَتّٰی جَلَسَ إِلَی النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ فَأَسْنَدَ رُکْبَتَیْہِ إِلَی رُکْبَتَیْہِ وَوَضَعَ کَفَّیْہِ عَلٰی فَخِذَیْہِ وَقَالَ یَا مُحَمَّدُ! أَخْبِرْنِی عَنِ الْإِسْلَامِ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَآلِہٖ وَسَلَّمَ اَلْإِسْلَامُ أَنْ تَشْھَدَ أَنْ لَا إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللّٰہِ (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ) وَتُقِیمَ الصَّلَاۃَ، وَتُؤْتِیَ الزَّکَاۃَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ، وَتَحُجَّ الْبَیْتَ إِنِ اسْتَطَعْتَ إِلَیْہِ سَبِیلًا قَالَ صَدَقْتَ فَعَجِبْنَا لَہُ یَسْأَلُہُ وَیُصَدِّقُہُ قَالَ فَأَخْبِرْنِی عَنِ الْإِیمَانِ قَالَ أَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰہِ وَمَلَائِکَتِہٖ وَکُتُبِہٖ وَرُسُلِہٖ وَالْیَوْمِ الْآخِرِ وَتُؤْمِنَ بِالْقَدَرِ خَیْرِہٖ وَشَرِّہٖ قَالَ صَدَقْتَ قَالَ فَأَخْبِرْنِی عَنِ الْإِحْسَانِ قَالَ أَنْ تَعْبُدَ اللّٰہَ کَأَنَّکَ تَرَاہُ فَإِنْ لَمْ تَکُنْ تَرَاہُ فَإِنَّہُ یَرَاکَ قَالَ فَأَخْبِرْنِی عَنِ السَّاعَۃِ قَالَ مَا الْمَسْئُولُ عَنْھَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ قَالَ فَأَخْبِرْنِی عَنْ أَمَارَتِھَا قَالَ أَنْ تَلِدَ الْأَمَۃُ رَبَّتَھَا وَأَنْ تَرَی الْحُفَاۃَ الْعُرَاۃَ الْعَالَۃَ رِعَاءَ الشَّاءِ یَتَطَاوَلُونَ فِی الْبُنْیَانِ قَالَ ثُمَّ انْطَلَقَ فَلَبِثْتُ مَلِیًّا ثُمَّ قَالَ لِی یَا عُمَرُ

أَتَدْرِى مَنِ السَّائِلُ قُلْتُ اَللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ أَعْلَمُ قَالَ فَإِنَّهٗ جِبْرِيْلُ أَتَاكُمْ يُعَلِّمُكُمْ دِينَكُمْ

(मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल ईमान, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 2, जि. 1, स. 21)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ से, फ़रमाते हैं कि एक दिन हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे कि एक साह़िब हमारे सामने नुमूदार हुए(1) जिन के कपड़े बहुत सफ़ेद और बाल ख़ूब काले थे(2) उन पर आसारे सफ़र ज़ाहिर न थे और हम में से कोई उन्हें पहचानता भी न था(3) यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे और अपने घुटने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घुटनों शरीफ़ से मस कर दिये(4) और अपने हाथ अपने ज़ानू पर रखे(5) और अ़र्ज़ किया, ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मुझे इस्लाम के मु-तअ़ल्लिक़ बताइये(6) फ़रमाया कि इस्लाम येह है कि तुम गवाही दो कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं(7) और नमाज़ क़ाइम करो, ज़कात दो, र-मज़ान के रोज़े रखो, का'बा का ह़ज करो अगर वहां तक पहुंच सको(8) अ़र्ज़ किया कि सच फ़रमाया । हम को उन पर तअ़ज्जुब हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछते भी हैं और तस्दीक़ भी करते हैं(9) अ़र्ज़ किया, कि मुझे ईमान के मु-तअ़ल्लिक़ बताइये । फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों, और आख़िरी दिन को मानो(10) और अच्छी बुरी तक़्दीर को मानो(11) अ़र्ज़ किया, आप सच्चे हैं । अ़र्ज़ किया मुझे एह़सान के मु-तअ़ल्लिक़ बताइये(12) फ़रमाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत ऐसे करो गोया उसे देख रहे हो(13) अगर येह न हो सके तो ख़याल करो वोह तुम्हें

देख रहा है ।(14) अ़र्ज़ किया क़ियामत की ख़बर दीजे(15) फ़रमाया कि जिस से पूछ रहे हो वोह क़ियामत के बारे में साइल से ज़ियादा ख़बरदार नहीं । अ़र्ज़ किया, कि क़ियामत की कुछ निशानियां ही बता दीजिये(16) फ़रमाया कि लौंडी अपने मालिक को जनेगी(17) और नंगे पाउं, नंगे बदन वाले फ़क़ीरों, बकरियों के चरवाहों को महलों में फ़ख़्र करते देखोगे(18) रावी फ़रमाते हैं कि फिर साइल चले गए मैं कुछ देर ठहरा । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे फ़रमाया ऐ उ़मर जानते हो येह साइल कौन है ? मैं ने अ़र्ज़ किया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जानें(19) । फ़रमाया, येह ह़ज़रते जिब्रईल थे जो तुम्हें तुम्हारा दीन सिखाने आए थे ।

वज़ाह़त :

(1) येह ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام थे जो शक्ले इन्सानी में ह़ाज़िर हुए थे जैसे बीबी मरयम के पास मर्द की शक्ल में गए । फ़िरिश्ता वोह नूरानी मख़्लूक़ है जो मुख़्तलिफ़ शक्लें इख़्तियार कर सकती है । जिन्न वोह आ-तशी मख़्लूक़ है जो हर क़िस्म की शक्ल बन जाती है मगर रूह़ वोही रहती है लिहाज़ा येह आवागोन नहीं ।

(2) या'नी वोह मुसाफ़िर न थे वरना उन के बाल व लिबास ग़ुबार में अटे होते । ख़याल रहे कि ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام के बाल काले, कपड़े सफ़ेद (चिट्टे) होना शक्ले ब-शरी का असर था वरना वोह ख़ुद नूरी हैं लिबास और सियाह बालों से बरी । हारूत मारूत फ़िरिश्ते शक्ले इन्सानी में आ कर खाते पीते बल्कि सोह़बत भी कर सकते थे । अ़साए मूसवी सांप की शक्ल में हो कर सब कुछ निगल गया था ऐसे ही हमारे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूरी बशर हैं खाना, पीना निकाह़ इस ब-शरिय्यत के अह़काम हैं रोज़ए विसाल में नूरानियत की जल्वा गरी

होती थी बिग़ैर खाए पिये अ़र्सए दराज़ गुज़ार लेते थे आज सदहा साल से ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बिग़ैर खाए पिये आस्मान पर जल्वा गर हैं येह नूरानियत का ज़ुहूर है।

(3) या'नी वोह मदीने के बाशिन्दे न थे वरना हम उन्हें पहचानते होते हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो उन्हें ख़ूब पहचानते थे जैसा कि अगले मज़्मून से ज़ाहिर है।

(4) या'नी हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से बहुत क़रीब बैठे। मा'लूम होता है कि हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) को पहचान लिया था वरना पूछते कि तुम कौन हो और इस त़रह़ मिल कर मुझ से क्यूं बैठते हो।

(5) जैसे नमाज़ी अत्तह़िय्यात में दो ज़ानू बैठता है आजकल ज़ाइरीन रौज़ए मुत़ह्हरा पर नमाज़ की त़रह़ खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करते हैं इस अदब की अस्ल येह ह़दीस है ह़ज़रते जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने क़ियामत तक के मुसल्मानों को हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी का अदब सिखा दिया और बता दिया कि नमाज़ की त़रह़ यहां खड़ा होना और बैठना ह़राम नहीं, हां सज्दा या रुकूअ़ करना ह़राम है।

(6) इस्लाम कभी ईमान के मा'ना में होता है कभी इस के इ़लावा, यहां दूसरे मा'ना में है या'नी ज़ाहिर का नाम इस्लाम है। बात़िनी अ़क़ाइद का नाम ईमान। इसी लिये यहां शहादत व आ'माल का ज़िक्र हुवा।

(7) कलिमा पढ़ने से मुराद सारे इस्लामी अ़क़ाइद का मान लेना है जैसे कहा जाता है कि नमाज़ में अल ह़म्द पढ़ना वाजिब है ''या'नी पूरी सूरए फ़ातिह़ा'' लिहाज़ा इस ह़दीस की बिना पर अब येह

नहीं कहा जा सकता कि तमाम इस्लामी फ़िर्क़े मिरज़ाई चकड़ालवी वग़ैरा मुसल्मान हैं। क्यूं कि येह लोग इस्लामी अ़क़ाइद से हट गए हैं।

(8) इस में ब ज़ाहिर ह़ज़रते जिब्रईल से ख़ित़ाब है, और दर ह़क़ीक़त मुसल्मान इन्सानों से, वरना फ़िरिश्तों पर नमाज़, रोज़ा, ह़ज वग़ैरा आ'माल फ़र्ज़ नहीं रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ''وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ'' ख़याल रहे कि येह आ'माल इस्लाम का जुज़्व नहीं कि इन का तारिक काफ़िर हो जाए यहां कमाले इस्लाम का ज़िक्र है तारिके आ'माल मुसल्मान तो है मगर कामिल नहीं।

(9) क्यूं कि पूछना न जानने की अ़लामत है और तस्दीक़ करना जानने की अ़लामत। इस से मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गुज़श्ता तमाम आस्मानी किताबों से वाक़िफ़ हैं कि रब عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में फ़रमाया : مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ۔

(10) ख़याल रहे कि عَنِ الْاِيْمَان में ईमाने इस्ति़लाही मुराद है और اَنْ تُؤْمِنَ में ईमाने लु-ग़वी या'नी मानना लिहाज़ा येह تَعْرِيْفُ الشَّيْءِ بِنَفْسِهٖ भी नहीं और इस में दौर भी नहीं तमाम फ़िरिश्तों, नबियों, किताबों पर इजमाली ईमान काफ़ी है गोया कि क़ुरआन और साहिबे क़ुरआन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तफ़्सीली ईमान लाज़िम है।

(11) इस त़रह़ कि हर बुरी भली बात जो हम कर रहे हैं, अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के इ़ल्म में पहले ही से है और इस की तह़रीर हो चुकी है तक़्दीर के मा'ना हैं अन्दाज़ा करना तक़्दीर दो क़िस्म की हैं मुबरम और मुअ़ल्लक़। मुबरम में तब्दीली नहीं हो सकती जब कि मुअ़ल्लक़ दुआ़ व आ'माल वग़ैरा से बदल सकती है, जैसा कि इब्लीस की दुआ़ से उस की उ़म्र बढ़ गई فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) की दुआ़ से दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) की उ़म्र साठ साल के बजाए

सो बरस हो गई ।

(12) रब (عَزَّوَجَلَّ) फ़रमाता है : لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى वग़ैरा इन आयात में एह़सान से क्या मुराद है जवाब मिला इख़्लासे अ़मल ।

(13) कि अगर तू ख़ुदा को देखता तो तेरे दिल में किस द-रजा उस का ख़ौफ़ होता और किस त़रह़ तू संभल कर अ़मल करता, ऐसे ही ख़ौफ़ के साथ दिल लगा कर दुरुस्त अ़मल कर ।

(14) यूं तो हर वक़्त ही समझो कि रब तुम्हें देख रहा है मगर इ़बादत की ह़ालत में तो ख़ास त़ौर पर ख़याल रखो, तो اِن شَآءَ الله इ़बादत आसान होगी, दिल में ह़ुज़ूर और आ़जिज़ी पैदा होगी, आंखों में आंसू आएंगे । अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) हम सब को इख़्लास नसीब करे । (आमीन)

(15) कि किस दिन, किस तारीख़ और किस महीने, किस साल होगी, मा'लूम होता है कि जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام का येह अ़क़ीदा है कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने क़ियामत का इ़ल्म दिया है क्यूं कि जानने वाले से ही पूछा जाता है यहां जिब्रईले अमीन ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इम्तिह़ान या इज़्हारे इज्ज़ के लिये तो सुवाल कर नहीं रहे हैं, बल्कि येह दिखाना चाहते हैं कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म तो है मगर इस का इज़्हार न फ़रमाया, ख़याल रहे कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूसरे मौक़ओं पर क़ियामत का दिन भी बता दिया, महीना भी, तारीख़ भी कि फ़रमाया जुमुआ़ को होगी दसवीं तारीख़, मुह़र्रम के महीने में होगी ।

(16) यहां इ़ल्म की नफ़ी नहीं वरना फ़रमाया जाता لَا اَعْلَمُ । मैं नहीं जानता बल्कि ज़ियादतिये इ़ल्म की नफ़ी है । या'नी इस का मुझे तुम से ज़ियादा इ़ल्म नहीं, मक़्सद येह है कि ऐ जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام यहां

लोगों का मज्मअ़ है और क़ियामत का इ़ल्म अस्रारे इलाहिय्यह में से है। येह राज़ मुझ से क्यूं फ़ाश कराते हो, ह़क़ येह है कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म भी दिया (तफ़्सीरे सावी वग़ैरा) इसी लिये ह़ज़रते जिब्रईल ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह सुवाल किया।

(17) या'नी अगर क़ियामत की ख़बर देना ख़िलाफ़े मस्लह़त है तो इस की ख़ुसूसी अ़लामात ही बता दीजिये। इस सुवाल से मा'लूम होता है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ियामत का इ़ल्म है अ़लामतें वाक़िफ़ ही से पूछी जाती हैं।

(18) या'नी औलाद ना फ़रमान होगी, बेटा मां से ऐसा सुलूक करेगा जैसा कोई लौंडी से तो गोया मां अपने मालिक को जनेगी।

(19) या'नी दुन्या में ऐसा इन्क़िलाब आएगा कि ज़लील लोग इ़ज़्ज़त वाले बन जाएंगे और अ़ज़ीज़ लोग ज़लील हो जाएंगे। जैसा कि आज देखा जा रहा है। बादशाह सिकन्दर ज़ुल क़रनैन ने हुक्म दिया था कि कोई पेशावर अपना मौरूसी पेशा नहीं छोड़ सकता ताकि आ़लम का निज़ाम न बिगड़ जाए। मा'लूम हुवा कि कमीनों का अपना पेशा छोड़ कर ऊंचा बन जाना अ़लामते क़ियामत है। और इस से निज़ामे आ़लम की तबाही है।

(20) येह सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का अदब है कि इ़ल्म अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) और रसूल (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सिपुर्द करते हैं इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के साथ मिला कर करना शिर्क नहीं, बल्कि सुन्नते सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان है। येह कह सकते हैं कि अल्लाह और रसूल जाने, अल्लाह और रसूल भला करे दूसरे येह कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को

ख़बर थी कि येह साइल जिब्रईल थे वरना आप (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) फ़रमा देते कि मुझे भी ख़बर नहीं येह कौन थे।

(21) या'नी इस लिये आए थे कि तुम्हारे सामने मुझ से सुवालात करें तुम जवाबात सुन कर दीन सीख लो इस से मा'लूम हुवा कि मुसल्मानों पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त वाजिब है न कि जिब्रईल की के यहां जिब्रईल ने हाज़िरीन से ख़ुद न कह दिया कि लोगो ! मैं जिब्रईल हूं मुझ से फुलां फुलां बात सीख लो बल्कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से कहलवाया ताकि लोगों के लिये क़ाबिले क़बूल हो, जिब्रईल के मा'ना हैं ''अ़ब्दुल्लाह'' जिब्र ब मा'ना अ़ब्द, ईल ब मा'ना अल्लाह ब ज़बान इ़बरानी।

(22) या'नी पांच चीज़ें रब عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता। क़ियामत कब होगी, बारिश कब आएगी, मां के पेट में क्या है और मैं कल क्या करूंगा और मैं कहां मरूंगा इस में सूरए लुक़्मान की आख़िरी आयत की त़रफ़ इशारा है इस आयत व ह़दीस का मत़्लब येह नहीं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने किसी को येह इ़ल्म दिये भी नहीं कातिबे तक़्दीर फ़िरिश्ता और म-लकुल मौत को येह उ़लूम बख़्शे गए हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने बद्र की जंग से पहले ज़मीन पर ख़ुत़ूत़ खींच कर फ़रमाया कि कल यहां फुलां फुलां काफ़िर मारा जावेगा बल्कि मत़्लब येह है कि येह उ़लूमे ख़म्सा क़ियास, तख़्मीना, हिसाब से मा'लूम नहीं हो सकते सिर्फ़ वह्ये इलाही से इन का पता लग सकता है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 24 ता 27)

(3) इस्तिग़फ़ार व तौबा की अहम्मिय्यत

عَن أَبِي هُرَيْرَةَقَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهِ إِنِّى لَأَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِى الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سَبْعِينَ مَرَّةً۔

(मिश्कातुल मसाबीह, ,کتاب الدعوات ، باب الاستغفار والتو بة، الفصل الاول, अल ह़दीस : 2323, जि. 1, स. 434)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रब (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम मैं एक दिन में सत्तर बार से ज़ियादा रब (عَزَّوَجَلَّ) से मग़्फ़िरत मांगता हूं और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।

वज़ाहत :

तौबा व इस्तिग़फ़ार रोज़े नमाज़ की त़रह़ इबादत भी है, इसी लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर आ़मिल थे या येह अ़मल हम गुनाहगारों की ता'लीम के लिये है वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मा'सूम हैं गुनाह आप के क़रीब भी नहीं आता, सूफ़िया फ़रमाते हैं कि हम लोग गुनाह कर के तौबा करते हैं और वोह ह़ज़रात इबादत कर के तौबा करते हैं।

ज़ाहिदां अज़ गुनाह तौबा कुनन्द आ़रिफ़ां अज़ इबादत इस्तिग़फ़ार

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 353)

(4) मो'जिज़ाते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

عَنْ جَابِرٍ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ)قَالَ عَطِشَ النَّاسُ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَّةِ وَرَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَيْنَ يَدَيْهِ رَكْوَةٌ فَتَوَضَّأَ مِنْهَا ثُمَّ أَقْبَلَ النَّاسُ نَحْوَهُ قَالُوا لَيْسَ عِنْدَنَا مَاءٌ نَتَوَضَّأُ بِهِ وَنَشْرَبُ إِلَّا مَا فِي رَكْوَتِكَ فَوَضَعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَدَهُ فِي الرَّكْوَةِ فَجَعَلَ الْمَاءُ يَفُورُ مِنْ بَيْنِ أَصَابِعِهِ كَأَمْثَالِ الْعُيُونِ قَالَ فَشَرِبْنَا وَتَوَضَّأْنَا قِيلَ لِجَابِرٍ كَمْ كُنْتُمْ يَوْمَئِذٍ قَالَ لَوْ كُنَّا مِائَةَ أَلْفٍ لَكَفَانَا كُنَّا خَمْسَ عَشْرَةَ مِائَةً۔

(मिश्कातुल मसाबीह, كتاب احوال القيامة،باب فى المعجزات, अल ह़दीस : 5882, जि. 2, स. 383)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाया कि लोग हुदैबिया के दिन प्यासे हुए और रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने एक डोल था[1] जिस से हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू किया फिर लोग उस त़रफ़ दौड़ पड़े बोले हमारे पास पानी नहीं जिस से हम वुज़ू करें और पियें सिवा इस पानी के जो आप के डोल में है[2] फिर नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना हाथ डोल में रखा तो पानी आप की उंग्लियों से चश्मों की त़रह़ फूटने लगा[3] फ़रमाया कि हम ने पिया और वुज़ू किया[4] ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा गया कि तुम कितने थे फ़रमाया अगर हम एक लाख भी होते तो हम को काफ़ी होता, हम पन्दरह सो थे ।[5]

वज़ाह़त :

(1) या'नी सुल्ह़े हुदैबिया के दिन हुदैबिया कूंएं का पानी हम ने थोड़ी देर में ही ख़ुश्क कर दिया जैसे कि अ़रब के कूंओं का ह़ाल होता है अब पानी सिर्फ़ एक चमड़े के डोल में था । जो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने रखा हुवा था "रक्वह" हुमैरा का एक डोल या बड़ा लोटा जिस से वुज़ू वगैरा किया जावे ।

(2) या'नी इस्लामी फ़ोज बिग़ैर पानी के है, प्यासी भी है, वुज़ू वग़ैरा की भी इसे ज़रूरत है और पानी सिर्फ़ इतना है जितना आप के साथ है ।

(3) हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के उस मो'जिज़े से अफ़्ज़ल है कि मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने पत्थर पर अ़सा मारा तो उस से पानी के बारह चश्मे जारी हो गए क्यूं कि पत्थर से पानी जारी कर देना वाक़ेई मो'जिज़ा है मगर उंग्लियों से पानी के चश्मे बहा देना बड़ा मो'जिज़ा है । आ'ला ह़ज़रत قُدِّسَ سِرُّهُ ने ख़ूब फ़रमाया

उंग्लियां हैं फ़ैज़ पर टूटे हैं प्यासे झूम कर
नद्दियां पंज आबे रह़मत की हैं जारी वाह वाह

(5) ख़ुश नसीब थे वोह ह़ज़रात जिन्हें उस पानी से वुज़ू नसीब हो गया । जिस से उन के ज़ाहिर व बात़िन दोनों पाक हुए येह पानी तमाम पानियों से अफ़्ज़ल था ह़त्ता कि आबे ज़मज़म से भी । (अज़ मिरक़ात)

(6) ख़याल रहे कि अहले हुदैबिया की ता'दाद में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं चौदह सो, पन्दरह सो, तेरह सो मगर तह़क़ीक़ येह है कि उन की ता'दाद पन्दरह सो पच्चीस थी बाक़ी रिवायात या तो तख़्मीनी हैं या

रावी की इत्तिलाअ़ के मुत़ाबिक़ हैं कि उन्हें इत्तिलाअ़ येह ही पहुंची (मिरक़ात) आप येह बता रहे हैं कि हम उस दिन क़रीबन पन्दरह सो थे मगर पानी के जोश और कसरत का आ़लम येह था कि अगर एक लाख भी होते तो पानी सब के पीने, वुज़ू व ग़ुस्ल को काफ़ी होता।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 181 ता 182)

(5) मनाक़िबे अ़ली رَضِیَ اللّٰہ عَنۡہُ

عَنۡ عَلِیٍّ قَالَ قَالَ رسولُ اللّٰہ صلّی اللہ علیہ وسلّم أَنَا دارُ الحِکۡمَۃِ وَعَلِیٌّ بَابُھَا،

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अ़ली, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 6096, जि. 2, स. 429)

तरजमा :

ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं इ़ल्म का घर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।

वज़ाह़त :

या'नी जैसे घर की जो चीज़ मिलती है दरवाज़े से मिलती है ऐसे ही मेरे इ़ल्म से जो कुछ जिसे मिलेगा अ़ली के ज़रीए से मिलेगा। ख़याल रहे कि हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के उ़लूम बहुत हैं और इन उ़लूम के बहुत दरवाज़े हैं ह़ज़रते अ़ली विलायत और क़ज़ा के दरवाज़ा हैं कि फ़रमाया وَاَقۡضَاھُمۡ عَلِیٌّ। ह़ज़रते उबय्य इब्ने का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इ़ल्मे तजवीद या'नी क़िराअत के दरवाज़ा हैं फ़रमाया اِنَّہٗ اَقۡرَأُکُمۡ और ह़ज़रत ज़ैद इब्ने साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इ़ल्मे फ़राइज़ के दरवाज़ा हें फ़रमाया اِنَّہٗ اَفۡرَضُکُمۡ और ह़ज़रते मुआ़ज़ इब्ने जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इ़ल्मे ह़लाल व ह़राम के दरवाज़ा हैं कि ھُوَ اَعۡلَمُکُمۡ بِالۡحَلَالِ وَالۡحَرَامِ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के उ़लूम जन्नत से ज़ियादा वसीअ़ हैं जब जन्नत के आठ दरवाज़े हैं لَہَا ثَمَانِیَۃُ اَبۡوَابٍ तो ना मा'लूम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म के कितने दरवाज़े हैं। जिन में से एक ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी हैं हर सह़ाबी हुज़ूर के किसी न किसी फ़ैज़ का दरवाज़ा हैं

फ़रमाया أَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ بِاَیِّهِمْ اِقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ (मिरक़ात) सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इल्मे विलायत के ह़ज़रते अ़ली क़ासिम हैं। हम ने अ़र्ज़ किया है

हों चिश्ती क़ादिरी या सुह़र वर्दी नक़्शबन्दी हों
विलायत का इन्ही के हाथ से सब को मिला टुकड़ा

ग़रज़ कि यहां ह़स्र का कोई लफ़्ज़ नहीं कि सिर्फ़ अ़ली दरवाज़ा हैं और दूसरा नहीं बा'ज़ रिवायात में है कि मैं इल्म का शहर हूं अबू बक्र इस की बुन्याद है उ़मर इस की दीवार उ़स्मान इस की छत और अ़ली दरवाज़ा है इसे मिरक़ात ने ब ह़वाला किताबुल फ़िरदौस नक़्ल फ़रमाया। इसी जगह ग़रज़ कि अगर इल्म से मुराद इल्मे त़रीक़त है तो सिर्फ़ ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इस का दरवाज़ा हैं और अगर इल्मे शरीअ़त मुराद है तो ह़ज़रते अ़ली दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 420 ता 421)

(6) मनाक़िबे उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ

عَنۡ طَلۡحَةَ بۡنِ عُبَيۡدِ اللّٰهِ قَالَ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ لِكُلِّ نَبِيٍّ رَفِيۡقٌ وَرَفِيۡقِىۡ يَعۡنِىۡ فِى الۡجَنَّةِ عُثۡمَانُ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे उ़स्मान, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 6070, जि. 2, स. 424)

तरजमा :

ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने कि हर नबी का कोई साथी होता है मेरे साथी या'नी जन्नत में उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ हैं।

वज़ाह़त :

या'नी मेरे ख़ुसूसी साथी ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ होंगे वरना मुत्लक़न साथी और बहुत से ख़ुश नसीब ह़ज़रात भी होंगे चुनान्चे बा'ज़ रिवायात में है कि मेरे ख़ास दोस्त अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا होंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 393)

(7) मनाक़िबे अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡھُمۡ اَجۡمَعِیۡن

عَنۡ جَابِرٍ قَالَ رَأَیۡتُ رَسُوۡلَ اللّٰہِ صلی اللہ علیہ وسلم فِیۡ حَجَّتِہٖ یَوۡمَ عَرَفَۃَ وَھُوَ عَلٰی نَاقَتِہِ الۡقَصۡوَآءِ یَخۡطُبُ فَسَمِعۡتُہٗ یَقُوۡلُ یٰۤاَیُّھَاالنَّاسُ اِنِّیۡ تَرَکۡتُ فِیۡکُمۡ مَااِنۡ اَخَذۡتُمۡ بِہٖ لَنۡ تَضِلُّوۡا کِتَابُ اللّٰہِ وَعِتۡرَتِیۡ اَھۡلُ بَیۡتِیۡ-

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबे अहले बैत, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 6152, जि. 2, स. 438)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) को आप के ह़ज में अ़-रफ़ा के दिन देखा जब आप अपनी ऊंटनी क़स्वा पर ख़ुत़्बा पढ़ रहे थे[1] मैं ने आप को फ़रमाते सुना कि ऐ लोगो मैं ने तुम में वोह चीज़ छोड़ी है कि जब तक तुम इन को थामे रहोगे गुमराह न होगे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की किताब और मेरी इ़तरत या'नी अहले बैत।[2]

वज़ाह़त :

(1) क़स्वा हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) की ऊंटनी का नाम था बा'ज़ लोगों ने समझा है कि चूंकि उस का कान कटा हुवा था इस लिये उस को क़स्वा कहते हैं। واللّٰہُ اعۡلَمُ

होते सदक़े कभी नाक़ा के कभी मह़मिल के
सारबां के कभी हाथों की बलाएं लेते
दश्ते त़यबा में तेरे नाक़ा के पीछे पीछे
धज्जियां जेबो गरीबां की उड़ाते जाते

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़िज्जतुल वदाअ़ का ख़ुत़्बा इसी ऊंटनी पर दिया था।

(2) इतरत के मा'ना : क़ौम, अक़ारिब, नज़्दीकी लोग, एक दादा की औलाद, और घर वाले हैं, اَہْلُ بَیْتِیْ फ़रमा कर इतरत की तफ़्सीर फ़रमा दी कि यहां इतरत से मुराद अहले बैत हैं। क़ुरआन पकड़ने से मुराद है इस के ऊपर अ़मल करना इतरत को पकड़ने से मुराद है इन का एह़तिराम करना इन की रिवायात पर ए'तिमाद करना इन के फ़रमानों पर अ़मल करना इस का मत़्लब येह नहीं कि सिर्फ़ अहले बैत ही को पकड़ो बाक़ी को छोड़ दो सह़ाबा के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया أَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ بِاَیِّهِمْ اِقْتَدَیْتُمْ اِهْتَدَیْتُمْ अहले बैत उम्मत के लिये कश्ती हैं सह़ाबा उम्मत के लिये तारे हैं समुन्दर के सफ़र में दोनों की ज़रूरत है इस में इशारतन फ़रमाया गया कि अहले बैते रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ख़्वाह अज़्वाजे पाक हों या औलाद सब हमेशा हिदायत पर रहेंगे कभी गुमराह या बे राह न होंगे बा'ज़ शारिह़ीन ने कहा है कि अहले बैत की इत़ाअ़त उन अह़काम में ज़रूरी है जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हों मगर ह़क़ येह है कि वोह ह़ज़रात न तो ख़िलाफ़े शर-अ़ कोई काम करते हैं और न इस का हुक्म देते हैं (मिरक़ात) बा'ज़ जाहिल कहते हैं कि यहां अहले बैत से मुराद क़ियामत तक के सय्यिद हैं मगर येह ग़लत़ है सय्यिद कहलाने वाले लोग बा'ज़ मिरज़ाई शीआ़ वग़ैरा हैं बा'ज़ फ़ुस्साक़ फिर इन की इत़ाअ़त कैसी इन लोगों को राहे रास्त पर लाने की कोशिश की जावे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 467)

(8) दम करना जाइज़ है

عَنْ عَلِيٍّ قَالَ :بَيْنا رسول اللّٰه صَلّى الله عليه وسَلّمَ ذاتَ لَيلةٍ يُصلِّي فَوَضَعَ يـدَه على الأرضِ فلدغتُه عقرَبٌ فَنَاولَها رسولُ اللهِ صلى الله عليه وسلم بنـعْـله فـقَتَـلهـا ، فـلَـمّـا اِنْـصرَفَ قال: لعنَ اللّٰهُ العقربَ، ما تدَعُ مُصَلِّياً،ولا غيرَه أونبيّاً وغيرَه ، ثم دعا بمِلْحٍ وماءٍ فجعله فى إناءٍ ثمّ جعـلَ يـصُبُّـه عـلـى إصبعـه حيـثُ لـدغتُه ويمسحُها ، ويعوِّذها بالمعوَّذَتينِ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, كتاب الطب والرقى ، باب الفصل الثالث, अल ह़दीस : 4567, जि. 2, स. 149)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से फ़रमाते हैं कि इस दरमियान कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रात नमाज़ पढ़ रहे थे कि आप ने अपना हाथ ज़मीन पर रखा तो बिच्छू ने काट लिया[1] तब रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने जूते शरीफ़ से उसे मारा ह़त्ता कि उसे क़त्ल कर दिया फिर जब फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बिच्छू पर ला'नत करे नमाज़ी ग़ैरे नमाज़ी नबी ग़ैरे नबी किसी को नहीं छोड़ता[2] फिर नमक और पानी मंगाया फिर उसे बरतन में डाला फिर उसे अपनी उंगली पर डालने लगे जहां बिच्छू ने काटा था उसे पूंछने लगे और उस पर सूरए फ़लक़ व नास से दम करने लगे ।[3]

वज़ाहत :

(1) आप के बाएं हाथ की उंगली पर काट लिया जिस्मे नबी पर ज़हर, डंक, तलवार असर कर सकती है येह वारिदात ब-शरिय्यत पर वारिद होती है।

(2) बा'ज़ रिवायात में है कि उसे मार कर फ़रमाया कि बिच्छू मूज़ी है इसे हिल्लो हरम हर जगह मार दो मूज़ी वोह जानवर है जो अपने नफ़्अ़ के बिग़ैर इन्सान का नुक़्सान कर दे लिहाज़ा खटमल, जूं, मूज़ी नहीं कि इन्सान को काटती है मगर अपना पेट भरने के लिये।

(3) येह है दवा और दुआ़ का इज्तिमाअ़ नमक व पानी भिड़ (तम्बूड़ी) और बिच्छू वग़ैरा के काटे के लिये बहुत ही मुफ़ीद है। يمسحها से मा'लूम हुवा कि दम करते वक़्त बीमारी की जगह पर हाथ फैरना सुन्नत है बा'ज़ रिवायात में है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे मरीज़ पर सूरए फ़ातिहा पढ़ कर दम फ़रमाते।

(मिरआत, जि. 6, स. 247)

(9) ज़बान की हिफ़ाज़त

عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ يَضْمِنُ لِيْ مَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ وَمَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ أَضْمِنُ لَهُ الْجَنَّةَ۔

(मिश्कातुल मसाबीह, किताबुल आदाब, बाब हिफ़्ज़ुल्लिसान....अल्ख, अल फ़स्लुल अव्वल, अल हदीस : 4812, जि. 2, स. 189)

तरजमा :

रिवायत है हज़रते सह्ल बिन सा'द से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने, कि जो कोई मुझे अपने दो जबड़ों और दो पाउं के दरमियान की चीज़ की ज़मानत दे मैं उस के लिये जन्नत का ज़ामिन हूं।

वज़ाहत :

दो जबड़ों के दरमियान की चीज़ ज़बान व तालू वग़ैरा है और दो पाउं के बीच की चीज़ शर्मगाह है या'नी अपनी ज़बान को झूट, ग़ीबत ना जाइज़ बातें करने से बचाए अपने मुंह को हराम ग़िज़ा से महफ़ूज़ रखे, अपनी शर्मगाह को ज़िना के क़रीब न जाने दे ज़ाहिर बात है ऐसा मुसल्मान मोमिन मुत्तक़ी होगा। ख़याल रहे कि क़रीबन अस्सी फ़ीसद गुनाह ज़बान से होते हैं जो अपनी ज़बान की पाबन्दी करे वोह चोरी डकैती क़त्ल भी नहीं करता इन्सान जुर्म जभी करता है जब कि झूट बोलने पर आमादा हो जावे कि अगर पकड़ा गया तो मैं इन्कार कर दूंगा झूट तमाम गुनाहों की जड़ है। ख़याल रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की येह ज़मानत ता क़ियामत इन्सानों के लिये है और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ की ज़मानत ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 447)

(10) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत की ब-र-कत

عن أنسٍ أَنَّ رجلاً قال يا رسولَ اللّٰه! متَى السّاعَةُ؟ قال ويُلَكَ! وما أَعْدَدْتَ لها؟ قال ماأَعْدَدْتُ لهاإِلَّا أَنِّى أُحِبُّ اللّٰهَ ورَسُولَهُ قال اَنْتَ مع مَنْ اَحْبَبْتَ قَالَ اَنَسٌ فَمَا رَاَيْتُ الْمُسْلِمِيْنَ فَرِحُوا بِشَیْءٍ بَعْدَ الإِسْلَامِ فَرِحَهُمْ بِهَا۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल आदाब, बाब अल हुब्बु फ़िल्लाह....अल्ख, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 5009, जि. 2, स. 218)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत कब है ? फ़रमाया अफ़्सोस तुझ पर ! तूने उस के लिये क्या तय्यारी की है ?[1] वोह बोला मैं ने उस की तय्यारी कोई नहीं की बजुज़ इस के कि मैं अल्लाह और उस के रसूल से महब्बत करता हूं[2] फ़रमाया तू उस के साथ होगा जिस से तुझे महब्बत हो ह़ज़रते अनस (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने फ़रमाया कि मैं ने मुसल्मानों को इस्लाम के बा'द किसी चीज़ पर ऐसा खुश होते न देखा जैसा कि वोह इस से खुश हुए।[3]

वज़ाहत :

(1) येह अफ़्सोस ग़ज़ब के लिये नहीं करम के लिये है जैसे ह़ज़रते अबू ज़र गिफ़ारी (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से फ़रमाया عَلٰی رَغْمِ اَنْفِ اَبِیْ ذَرٍّ इस कलिमे का मज़ा वोह जाने जिसे दिल से लगी हो या मक़्सद येह है कि तू आ'माल तो करता नहीं सिर्फ़ क़ियामत के मु-तअ़ल्लिक़ पूछता है।

(2) येह साहिब बड़े मुत्तक़ी, परहेज़ गार, इबादत गुज़ार थे मगर उन्हों ने अपने आ'माल को क़ियामत की तय्यारी क़रार न दिया कि येह सब नेकियां तो अल्लाह की ने'मतों का शुक्रिया है जो मुझे दुन्या में मिल चुकीं और मिल रही हैं आख़िरत की तय्यारी सिर्फ़ येह है कि मुझे इस बरात के दूल्हा से महब्बत है दूल्हा से तअ़ल्लुक़ इस से महब्बत बरात के खाने वाने, जोड़े इन्आ़म का मुस्तहिक़ बना देते हैं। (साहिबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि अल्लाह रसूल से महब्बत साइरीन और ताइरीन के मक़ामात में से आ'ला मकाम है सारी इबादात महब्बत की फ़रूअ़ हैं। मगर महब्बत के साथ इताअ़त बल्कि मुता-ब-अ़त ज़रूरी है बरात का खाना सिर्फ़ उ़म्दा लिबास से नहीं मिलता बल्कि दुल्हा के तअ़ल्लुक़ से मिलता है अगर रब तआ़ला से कुछ लेना है तो हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से तअ़ल्लुक़ पैदा कर।

(3) या'नी हज़राते सहाबए किराम को सब से बड़ी ख़ुशी तो अपने इस्लाम लाने पर हुई थी कि अल्लाह तआ़ला ने इन्हें मोमिन सहाबी बनने की तौफ़ीक़ बख़्शी इस के बा'द आज येह फ़रमाने आ़ली सुन कर बड़ी ख़ुशी हुई इस ख़ुशी की वजह येह है कि हज़राते सहाबा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बिग़ैर चैन न पाते थे उन्हें खटका था कि मदीनए मुनव्वरह में तो हम को हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब है कि यार ने मदीने में अपना काशाना बनाया है मगर जन्नत में क्या बनेगा कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मक़ाम आ'ला इल्लिय्यीन से भी आ'ला होगा हम किसी और द-रजे में होंगे आज हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने पर्दा उठा दिया तमाम को तसल्ली दे दी फ़रमा दिया कि जिस को मुझ से सहीह़ महब्बत होगी उसे मुझ से

फ़िराक़ न होगा मेरे साथ ही रहेगा ख़याल रहे कि यहां द-रजे की हमराही या बराबरी मुराद नहीं बल्कि ऐसे हमराही मुराद है जैसे सुल्त़ान के ख़ास ख़ुद्दाम सुल्त़ान के साथ उस के बंगले में रहते हैं सब से बड़ा ख़ुश नसीब वोह है जिसे कल हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का क़ुर्ब नसीब हो जाए इस क़ुर्ब का ज़रीआ़ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) से मह़ब्बत है और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत का ज़रीआ़ इत्तिबाए़ सुन्नत, कसरत से दुरूद शरीफ़ की तिलावत, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के ह़ालाते त़य्यिबा का मुत़ा-लआ़ और मह़ब्बत वालों की सोह़बत है येह सोह़बत इक्सीरे आ'ज़म है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 589)

(11) कस्बे ह़लाल की अहम्मिय्यत

عَنْ عبدِ اللّٰهِ ، قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلّى الله عليه وسلّم: طَلَبُ كَسْبِ الحَلالِ فَرِيضةٌ بعدَ الفريضةِ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल बुयूअ़, باب الكسب وطلب الحلال الفصل الثالث, अल ह़दीस : 2781, जि. 1, स. 517)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने ह़लाल कमाई की तलाश[1] एक फ़र्ज़ के बा'द दूसरा फ़र्ज़ है।[2]

वज़ाह़त :

(1) कस्ब ब मा'ना मुक्तसिब है या'नी पेशा और ह़लाल ह़राम का मुक़ाबिल भी है और मुश्तबिहात का भी क्यूं कि ह़राम कमाई की तलाश ह़राम है और मुश्तबह की मक्रूह (मिरक़ात) तलाश से मुराद जुस्त-जू करना और ह़ासिल करना है।

(2) या'नी इ़बादाते फ़रीज़ा के बा'द येह फ़र्ज़ है कि इस पर बहुत से फ़राइज़ मौक़ूफ़ हैं ख़याल रहे कि येह हुक्म सब के लिये नहीं, सिर्फ़ उन के लिये है जिन का ख़र्च दूसरों के ज़िम्मे न हो बल्कि अपने ज़िम्मे हो, और उस के पास माल भी न हो, वरना ख़ुद मालदार पर और छोटे बच्चों पर फ़र्ज़ नहीं, येह ख़याल रहे कि ब क़द्रे ज़रूरत मआ़श की त़लब ज़रूरी है, सिर्फ़ अकेले को अपने लाइक़ बाल बच्चों वाले को उन के लाइक़ कमाना ज़रूरी है। بَعْدَ الْفَرِیْضَۃِ फ़रमाने से मा'लूम हुवा कि कमाई की फ़र्ज़िय्यत नमाज़ रोज़ा की फ़र्ज़िय्यत की मिस्ल नहीं कि इस का मुन्किर काफ़िर हो और तारिक फ़ासिक़।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 239)

(12) ग़सब की मज़म्मत

عن سَعِيد بن زيد قَالَ قَالَ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ أَخَذَ شِبْرًا مِنَ الْأَرْضِ ظُلْمًا فَإِنَّهُ يُطَوَّقُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ سَبْعِ أَرضِينَ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल बुयूअ़, बाबुल ग़सब वल आ़रिय्यह, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 2938, जि. 1, स. 542)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने कि जो बालिश्त भर ज़मीन ज़ुल्मन ले ले तो क़ियामत के दिन उसे सात ज़मीनों का तौ़क़ पहनाया जाएगा ।

वज़ाह़त :

इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि ज़मीन के सात त़ब्क़े ऊपर नीचे हैं सिर्फ़ सात मुल्क नहीं पहले तो उस ग़ासिब को ज़मीन के सात त़बक़ों का तौ़क़ पहनाया जाएगा फिर उसे ज़मीन में धंसा दिया जाएगा लिहाज़ा जिन अह़ादीस में है कि उसे ज़मीन में धंसाया जाएगा वोह अह़ादीस इस ह़दीस के ख़िलाफ़ नहीं येह ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिर पर है किसी तावील की ज़रूरत नहीं अल्लाह तआ़ला उस ग़ासिब की गरदन इतनी लम्बी कर देगा कि इतनी बड़ी हंसली उस में आ जाएगी मा'लूम हुवा कि ज़मीन का ग़सब दूसरे ग़सब से सख़्त तर है ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 313)

(13) फ़ज़ीलते मदीना

عَنْ اِبْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ اِسْتَطَاعَ أَنْ يَمُوتَ بِالْمَدِينَةِ فَلْيَمُتْ بِهَا فَإِنِّي أَشْفَعُ لِمَنْ يَمُوتُ بِهَا۔

(मिश्कातुल मसाबीह, كتاب المناسك ، باب حرم المدينة .....الخ ، الفصل الثانى, अल ह़दीस : 2750, जि. 1, स. 511)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो मदीने में मर सके वोह वहां ही मरे क्यूं कि मैं मदीने में मरने वालों की शफ़ाअ़त करूंगा।

वज़ाह़त :

ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसल्मानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरीन को, या'नी जिस मुसल्मान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे ख़ुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़्न वहां का ही नसीब हो, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दुआ़ करते थे कि मौला मुझे अपने मह़बूब के शहर में शहादत की मौत दे आप की दुआ़ ऐसी क़बूल हुई कि سُبْحٰنَ اللّٰہ फ़ज्र की नमाज़, मस्जिदे न-बवी, मेह़राबुन्नबी, मुसल्लए नबी और वहां शहादत। मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरह में हैं हुदूदे मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते इसी ख़त़रे से कि मौत बाहर न आ जाए ह़ज़रते इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का भी येह ही दस्तूर रहां, यहा शफ़ाअ़त से मुराद

ख़ुसूसी शफ़ाअ़त है गुनहगारों के सारे गुनाह बख़्शवाने की शफ़ाअ़त और नेककारों के बहुत द-रजे बुलन्द करने की शफ़ाअ़त वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी सारी ही उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, ख़याल रहे कि मदीनए पाक में रहना भी अफ़्ज़ल, वहां मरना भी आ'ला वहां दफ़्न होना भी बेहतर, बा'ज़ सह़ाबा बा'दे मौत मदीने में ला कर दफ़्न किये गए इस से इशारतन मा'लूम होता है कि जो शख़्स मदीनए पाक में मरने दफ़्न होने की कोशिश करे वोह (عَزَّوَجَلَّ) اِنْ شَآءَ الله ईमान पर मरेगा क्यूं कि उस के लिये शफ़ाअ़ते ख़ास का वा'दा है शफ़ाअ़त सिर्फ़ मोमिन की हो सकती है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 4, स. 222)

(14) हुक़ूक़े मुस्लिम

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ) قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ وَإِجَابَةُ الدَّعْوَةِ وَتَشْمِيتُ الْعَاطِسِ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल जनाइज़, बाब इया-दतिल मरीज़, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 1524, जि. 1, स. 293)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कि मुसल्मान के मुसल्मान पर पांच ह़क़ हैं[1] सलाम का जवाब देना, बीमार की इ़यादत करना, जनाज़ों के साथ जाना, दा'वत क़बूल करना, छींक का जवाब देना।[2]

वज़ाह़त :

(1) येह पांच की ता'दाद ह़स्र के लिये नहीं बल्कि एहतिमाम के लिये है या'नी पांच ह़क़ बहुत शानदार और ज़रूरी हैं क्यूं कि येह क़रीबन सारे फ़र्ज़े किफ़ाया और कभी फ़र्ज़े ऐन हैं लिहाज़ा येह ह़दीस उन अह़ादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में ज़ियादा हुक़ूक़ बयान हुए। ख़याल रहे कि येह इस्लामी हुक़ूक़ हैं मुसल्मान फ़ासिक़ हो या मुत्तक़ी सब के साथ येह बरताव किये जाएं काफ़िरों का इन में से कोई ह़क़ नहीं।

(2) बीमार की इ़यादत और ख़िदमत यूं ही जनाज़े के साथ जाना आ़म ह़ालात में सुन्नत है लेकिन जब कोई येह काम न करे तो फ़र्ज़ है कभी फ़र्ज़े किफ़ाया कभी फ़र्ज़े ऐन यूं ही दा'वत में शिरकत खाने के लिये या वहां इन्तिज़ाम या काम काज के लिये सुन्नत है कभी फ़र्ज़

लेकिन अगर ख़ास दस्तर ख़्वान पर ना जाइज़ काम हों जैसे शराब का दौर या नाच गाना तो शिरकत ना जाइज़ है, छींकने वाला اَلْحَمْدُلِلّٰہِ कहे तो सुनने वाले सब या एक जवाब में कहें یَرْحَمُكَ اللّٰهُ फिर छींकने वाला कहे یَهْدِیْكُمُ اللّٰهُ وَیُصْلِحُ بَالَكُمْ और अगर वोह ह़म्द न करे या उसे ज़ुकाम है कि बार बार छींकता है तो फिर जवाब देना ज़रूरी नहीं, सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना फ़र्ज़[1] मगर सवाब सलाम का ज़ियादा है[2] येह उन सुन्नतों में से एक है जिस का सवाब फ़र्ज़ से ज़ियादा है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 403)

1 : सलाम का जवाब फ़ौरन देना "वाजिब" है। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा शानिज़ दहुम, सफ़ह़ा 89)

2 : इस में इख़्तिलाफ़ है कि अफ़्ज़ल क्या है सलाम करना या जवाब देना। किसी ने कहा जवाब देना अफ़्ज़ल है क्यूं कि सलाम करना सुन्नत है और जवाब देना वाजिब है। बा'ज़ ने कहा कि सलाम करना अफ़्ज़ल है कि इस में तवाज़ोअ़ है। जवाब तो सभी दे देते हैं मगर सलाम करने में बा'ज़ मर्तबा बा'ज़ लोग कस्रे शान समझते हैं। (बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम, ह़िस्सा शानिज़ दहुम, सफ़ह़ा 89)

(15) फ़ज़ाइले कुरआन

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُقَالُ لِصَاحِبِ الْقُرْآنِ اِقْرَأْ وَارْتَقِ وَرَتِّلْ كَمَا كُنْتَ تُرَتِّلُ فِى الدُّنْيَا فَإِنَّ مَنْزِلَكَ عِنْدَ آخِرِ آيَةٍ تَقْرَؤُهَا۔

(मिश्कातुल मसाबीह, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, अल फ़स्लुस्सानी, अल हदीस : 2134, जि. 1, स. 402)

तरजमा :

रिवायत है हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कि कुरआन वाले से कहा जाएगा[1] पढ़ और चढ़[2] और यूंही आहिस्तगी से तिलावत कर जैसे दुन्या में करता था आज तेरा ठिकाना व मक़ाम वहां है जहां तू आख़िरी आयत पढ़े।[3]

वज़ाहत :

कुरआन वाले से मुराद वोह मुसल्मान है जो हमेशा तिलावत करता हो और इस पर आ़मिल हो, वोह शख़्स नहीं कि जो कुरआन पढ़ता हो और कुरआन उस पर ला'नत करता हो कि येह तिलावत तो अ़ज़ाबे इलाही का बाइ़स है बा'ज़ आर्या और ईसाई भी कुरआने पाक पर ए'तिराज़ात करने के लिये कुरआने पाक पढ़ते बल्कि हिफ़्ज़ तक कर लेते हैं पन्डित काली चरन चौदह पारों का हाफ़िज़ हुवा।

(2) जन्नत के द-रजे ऊपर तले हैं जिस क़दर द-रजे की बुलन्दी उसी क़दर बेहतर اِن شَآءَ الله उस दिन तिलावते कुरआन मोमिन के

लिये परों का काम देगी या इस से मरातिबे क़ुर्बे इलाही में तरक़्क़ी करना मुराद है या'नी तिलावत करता जा और मुझ से क़रीब तर होता जा।

(3) या'नी जहां तेरा पढ़ना ख़त्म, वहां तेरा चढ़ना ख़त्म, वहां इसी क़दर तिलावत कर सकेगा जिस क़दर तिलावत दुन्या में करता था और जिस त़रह़ आहिस्ता या जल्दी यहां तिलावत करता था इसी त़रह़ वहां करेगा इस से चन्द मसाइल मा'लूम हुए एक येह कि जन्नत के छ हज़ार छ सो छियासठ द-रजे हैं क्यूं कि क़ुरआने मजीद की आयात इतनी ही हैं और हर आयत पर एक द-रजा मिलता है अगर द-रजे इस से कम हों तो येह ह़िसाब कैसे दुरुस्त हो और हर दो द-रजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितना ज़मीन व आस्मान के दरमियान (मिरक़ात) दूसरे येह कि जन्नत में कोई इबादत न होगी सिवाए तिलावते क़ुरआन के। मगर येह तिलावत लज़्ज़त और तरक़्क़िये द-रजात के लिये होगी जैसे फ़िरिश्तों की तस्बीह़, तीसरे येह कि दुन्या में तिलावते क़ुरआने करीम का आ़दी बा'दे मौत اِنْ شَآءَ الله ह़ाफ़िज़े क़ुरआन हो जाएगा वरना येह शख़्स वहां बिग़ैर देखे सारा क़ुरआन कैसे पढ़ेगा, चौथे येह कि बिग़ैर तरजमा समझे भी तिलावत बहुत मुफ़ीद है कि यहां तिलावत को मुत़्लक़ रखा गया, यहां मिरक़ात ने फ़रमाया कि क़ुरआन में तफ़क्कुर करना मह़ज़ तिलावत से अफ़्ज़ल है इसी लिये सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہ عَنْہُ) हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबा से अफ़्ज़ल हुए जन्नत में सारी उम्मत से ऊंचे द-रजे में वोह ही होंगे।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 336)

(16) फ़ज़ीलते इल्मे दीन

عَنْ سَخْبَرَةَ الاَزْدِيِّ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِمَامَضٰى

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल इल्म, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 221, जि. 1, स. 63)

तरजमा :

ह़ज़रते **सख़्बरा** ने इर्शाद फ़रमाया कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने इल्म को तलाश किया तो येह तलाश उस के गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गई।''

वज़ाह़त :

त़ालिबे इल्म से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं जैसे (गुनाहे सग़ीरा) वुज़ू नमाज़ वग़ैरा इबादात से लिहाज़ा इस का मत़्लब येह नहीं कि त़ालिबे इल्म जो गुनाह चाहे करे। या मत़्लब येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ निय्यते ख़ैर से इल्म त़लब करने वालों को गुनाहों से बचने और गुज़श्ता गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करने की तौफ़ीक़ देता है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 203)

(17) तवक्कुल व सब्र का बयान

عَنْ عَلِيٍّ قال:قالَ رسولُ اللّٰه صلّى الله عليه وسلّم : مَنْ رَضِيَ مِنَ اللّٰهِ بالیَسیر منَ الرّزقِ رضِيَ اللهُ منه بالقليل منَ العَمَلِ

(मिश्कातुल मसाबीह़, كتاب الرقاق ، باب فضل الفقراء .....الخ ،الفصل الثالث, अल ह़दीस : 5263, जि. 2, स. 258)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہ عَنْہ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कि जो अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी होगा अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस के थोड़े अ़मल पर राज़ी होगा।

वज़ाह़त :

ख़याल रहे कि अल्लाह तआ़ला की रिज़ा दो क़िस्म की है, रिज़ाए अ-ज़ली दूसरी रिज़ाए अ-बदी। अल्लाह की रिज़ाए अ-ज़ली हमारी रिज़ा से पहले है जब वोह हम से राज़ी होता है तो हम को नेकियों की तौफ़ीक़ मिलती है मगर रिज़ाए अ-बदी हमारी रिज़ा के बा'द है, जब हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हो जाते हैं नेकियां कर लेते हैं तो वोह हम से राज़ी होता है यहां रिज़ाए अ-बदी का ज़िक्र है इस लिये बन्दे की रिज़ा पहले बयान हुई और इस आयते करीमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَرَضُوْا عَنْہُ में रिज़ाए अ-ज़ली का ज़िक्र है इस से वहां रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का पहले ज़िक्र है ह़दीस का मत़्लब ज़ाहिर है कि अगर तुम मा'मूली रोज़ी पा कर बहुत शुक्र करो तो रब तआ़ला तुम्हारे मा'मूली आ'माल की बहुत क़द्र फ़रमाएगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 84)

(18) अ़लामाते क़ियामत

عَنْ أَنَسٍ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُولُ إِنَّ مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ یُرْفَعَ الْعِلْمُ وَیَکْثُرَ الْجَهْلُ وَیَکْثُرَ الزِّنَا وَیَکْثُرَ شُرْبُ الْخَمْرِ وَیَقِلَّ الرِّجَالُ وَتَکْثُرَ النِّسَاءُ حَتّٰی یَکُونَ لِخَمْسِینَ امْرَأَةً الْقَیِّمُ الْوَاحِدُ

(मिश्कातुल मसाबीह, کتاب الرقاق ،باب اشراط الساعة، الفصل الاول, अल ह़दीस : 5437, जि. 2, स. 290)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाते हैं मैं ने रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना कि क़ियामत की निशानियों से येह है कि इ़ल्म उठा लिया जावेगा और जहालत बढ़ जावेगी[1] ज़िना शराब ख़ोरी बढ़ जावेगी[2] मर्द कम हो जावेंगे और औ़रतें ज़ियादा हो जाएंगी[3] ह़त्ता कि पचास औ़रतें, एक मर्द मुन्तज़िम होगा ।[4]

वज़ाह़त :

(1) इ़ल्म से मुराद इ़ल्मे दीन है जह़ल से मुराद इ़ल्मे दीन से ग़फ़्लत । आज येह अ़लामत शुरूअ़ हो चुकी है दुन्यावी उ़लूम बहुत तरक़्क़ी पर हैं मगर इ़ल्मे तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह बहुत कम रह गए, उ़-लमा उठते जा रहे हैं उन के जा नशीन पैदा नहीं होते । मुसल्मानों ने इ़ल्मे दीन सीखना क़रीबन छोड़ दिया बहुत से उ़-लमा वाइ़ज़ बन कर अपना इ़ल्म खो बैठे येह सब कुछ इस पेश गोई का

ज़ुहूर है ।

(2) ज़िना की ज़ियादती के अस्बाब औ़रतों की बे पर्दगी, स्कूलों कोलेजों, लड़कों लड़कियों की मख़्लूत़ ता'लीम, सिनेमा वग़ैरा की बे ह़याइयां, गाने, नाचने की ज़ियादतियां येह सब आज मौजूद हैं । इन वुजूह से ज़िना बढ़ रहा है और अभी और ज़ियादा बढ़ेगा । हम ने अ़रब मुमालिक के बा'ज़ अ़लाक़ों में देखा कि बिग़ैर शराब कोई खाना नहीं होता । होटल में खाना मांगो तो शराब साथ आती है ।

(3) इस त़रह़ कि लड़कियां ज़ियादा पैदा होंगी लड़के कम फिर मर्द जंगों वग़ैरा में ज़ियादा मारे जाएंगे अपने बीवी बच्चे छोड़ जाएंगे इन वुजूह से औ़रतों की बोहतात होगी ।

(4) इस का येह मत़लब नहीं कि एक ख़ाविन्द की पचास बीवियां होंगी कि येह तो ह़राम है बल्कि मत़लब येह है कि एक ख़ानदान में औ़रतें बेटियां पचास होंगी मां, दादी, ख़ाला, फूफी वग़ैरा और उन का मुन्तज़िम एक मर्द होगा दूसरी अह़ादीस में है कि क़रीबे क़ियामत संगे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम उठा लिया जावेगा क़ियामत के क़रीब दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कहने वाला कोई न होगा ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 254)

(19) रियाकारी और दिखलावे की बुराई

عَنْ أَبِی سَعْدِ بْنِ أَبِی فَضَالَةَ عَنْ رَسُولِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِذَا جَمَعَ اللّٰهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ نَادَى مُنَادٍ مَنْ كَانَ أَشْرَكَ فِی عَمَلٍ عَمِلَهُ لِلّٰهِ أَحَدًا فَلْيَطْلُبْ ثَوَابَهُ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ أَغْنَى الشُّرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ

(मिश्कातुल मसाबीह, كتاب الرقاق ، باب الرياء والسمعة، الفصل الثانی ,अल हदीस : 5318, जि. 2, स. 267)

तरजमा :

रिवायत है हज़रते अबू सा'द इब्ने फ़ज़ाला (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ) से वोह रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रावी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ लोगों को जम्अ़ फ़रमाएगा उस दिन जिस में कोई शक नहीं तो पुकारने वाला पुकारेगा[1] कि जिस ने ऐसे काम में जो अल्लाह के लिये करे किसी को शरीक ठहराया[2] तो वोह उस का सवाब भी ग़ैरे ख़ुदा से मांगे[3] क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शरीकों में शिर्क से बे नियाज़ है।

वज़ाहत :

(1) या'नी क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से ए'लान फ़रमाएगा येह ए'लान तमाम लोगों को सुनाने के लिये होगा।

(2) या'नी जो काम रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये किये जाते हैं उन में किसी बन्दे की रिज़ा की निय्यत करे बन्दे से मुराद दुन्यादार बन्दा

है और ज़ाहिर करना भी अपनी नामवरी के लिये होना मुराद है लिहाज़ा जो शख़्स अपनी इबादात में हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा की भी निय्यत करे या जो कोई मुसल्मानों को सिखाने की निय्यत से लोगों को अपने आ'माल दिखाए वोह इस वईद में दाख़िल नहीं इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि रिया सिर्फ़ इबादात में होती है मुआ-मलात और दूसरे दुन्यावी काम तो दिखाने के लिये ही किये जाते हैं इन में रिया का सुवाल ही पैदा नहीं होता इसी लिये अ़मल के साथ عَمِلَهُ لِلّٰهِ फ़रमाया गया।

(3) या'नी आज आ'माल के बदले का दिन है दुन्या में जिस की रिज़ा के लिये इबादत की थी आज उसी से जन्नत भी मांगो येह इन्तिहाई सख़्ती व नाराज़ी का इज़्हार है इस का मत़्लब येह नहीं कि रियाकार कभी बख़्शा ही न जाएगा हर मोमिन आख़िरे कार बख़्शा जाएगा। शु-रका से मुराद दुन्या के शरीक व ह़िस्सादार हैं या मुश्रिकीन के बुत वग़ैरा जिन्हें वोह अल्लाह के शरीक जानते थे।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 130)

(20) शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

عَنْ أَنَسٍ قَالَ سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَّشْفَعَ لِيَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَقَالَ أَنَا فَاعِلٌ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ! فَأَيْنَ أَطْلُبُكَ؟ قَالَ اُطْلُبْنِي أَوَّلَ مَا تَطْلُبُنِي عَلَى الصِّرَاطِ قُلْتُ فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عَلَى الصِّرَاطِ؟ قَالَ فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الْمِيزَانِ؟ قُلْتُ فَإِنْ لَمْ أَلْقَكَ عِنْدَ الْمِيزَانِ قَالَ فَاطْلُبْنِي عِنْدَ الْحَوْضِ فَإِنِّي لَا أُخْطِءُ هٰذِهِ الثَّلَاثَ الْمَوَاطِنَ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, کتاب احوال القیامة وبدء الخلق، باب الحوض والشفاعة، الفصل الثانی, अल ह़दीस : 5595, जि. 2, स. 326)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से फ़रमाते हैं मैं ने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया क़ियामत के दिन (मेरी) शफ़ाअ़त फ़रमा दें।[1] फ़रमाया मैं शफ़ाअ़त करूंगा। मैं ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं हुज़ूर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कहां तलाश करूं ?[2] फ़रमाया तुम मुझे पहले तो तलाश करना पुल सिरात़ पर। अ़र्ज़ किया अगर पुल सिरात़ पर न पाउं ? फ़रमाया फिर मुझे मीज़ान के पास ढूंडना।[3] मैं ने अ़र्ज़ किया अगर मैं हुज़ूर को मीज़ान के पास न पाउं ?[4] फ़रमाया फिर मुझे ह़ौज़ के पास तलाश करना[5] क्यूं कि मैं इन तीन जगहों के इ़लावा नहीं होउंगा।

वज़ाह़त :

(1) शफ़ाअ़त से मुराद ख़ास शफ़ाअ़त है जो ख़ास ग़ुलामों

की होगी शफ़ाअ़ते आ़म्मा तो हर मोमिन की होगी ख़याल रहे कि ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہ عَنْہُ ने एक शफ़ाअ़त मांग कर ईमान, तक़्वा, हुस्ने ख़ातिमा, क़ब्र के इम्तिह़ान में काम्याबी सब कुछ मांग ली कि येह चीज़ें शफ़ाअ़ते ख़ास्सा की तम्हीदें हैं।

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली दो जहां की ख़ैर
मुझ सा कोई गदा नहीं तुझ सा कोई सख़ी नहीं

इस एक कलिमे में बहुत से वा'दे हैं तुम ईमान पर जियोगे तुम्हारी ज़िन्दगी तक़्वा में गुज़रेगी तुम्हारा ख़ातिमा ईमान पर होगा। तुम्हारी ख़ताएं क़ाबिले मुआ़फ़ी होंगी तुम्हारी शफ़ाअ़त मेरे ज़िम्मे होगी क्यूं कि कुफ़्र, हुक़ूक़ुल इ़बाद की शफ़ाअ़त नहीं होगी। आज भी मुसल्मान रौज़ए अत़्हर पर अ़र्ज़ करते हैं या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम आप से शफ़ाअ़त की भीक मांगते हैं येह ह़दीस इस मांगने की अस्ल है मा'लूम हुवा कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से भीक मांगना जाइज़ है कि दुन्या की हर चीज़ शफ़ाअ़त से नीचे है ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी साइल को मह़रूम नहीं करते وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَاتَنْهَرْ ह़ुज़ूर से औलाद मांगो दीन व दुन्या मांगो दुन्या की हर ने'मत मांगो जो मांगोगे पाओगे वहां से मह़रूम कोई नहीं फिरता।

(2) ख़याल रहे कि क़ियामत में एक वक़्त तो वोह होगा जब सारा जहां ह़ुज़ूर को ढूंडेगा फिर वक़्त वोह आएगा कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने गुनाहगार को ढूंडेंगे

अ़ज़ीज़ बच्चे को मां जिस त़रह़ तलाश करे
ख़ुदा गवाह येही ह़ाल आप का होगा
वोह लेंगे छांट अपने नाम लेवाओं को मह़शर में
ग़ज़ब की भीड़ में, उन की मैं इस पहचान के सदक़े

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सुवाल ग़ालिबन पहले वक़्त के मु-तअ़ल्लिक़ है कभी ऐसा भी होगा कि गुनहगार हुज़ूर को और ग़म ख़्वार मह़बूब अपने गुनाह गार को तलाश करेंगे दो त़रफ़ा तलाश होगी हुज़ूर पुल सिरात़ के किनारे खड़े होंगे ताकि गिरतों को सहारा दें। हुज़ूर मीज़ान पर अपनी उम्मत के आ'माल का वज़्न अपने एहतिमाम से करवाएंगे कि अगर किसी उम्मती की नेकियां हलकी हों और वोह दोज़ख़ में ले जाया जाने लगे तो अपना कोई अ़मल, अपना क़दम रख कर, शफ़ाअ़त फ़रमा कर उस की नेकियां वज़्नी कर देंगे दोज़ख़ से बचा लेंगे क्यूं कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ'माल का वज़्न न होगा।

(4) سُبْحٰنَ اللہ क्या प्यारा सुवाल है या'नी आप को उस दिन एक जगह तो मुस्तक़िल क़रार होगा नहीं कभी इन मुजरिमों के पास, कभी दूसरे मुजरिमों के पास

कोई क़रीबे तराज़ू कोई लबे कौसर — कोई सिरात़ पे उन को पुकारता होगा
किसी त़रफ़ से सदा आएगी हुज़ूर आओ — नहीं तो दम में ग़रीबों का फ़ैसला होगा
कोई कहेगा दुहाई है या रसूलल्लाह — तो कोई थाम के दामन मचल रहा होगा

ग़रज़ एक जान और फ़िक्रे जहां اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ तो अगर आप मीज़ान पर न मिलें तो फिर कहां तलाश करूं।

(5) ग़ालिबन यहां ह़ौज़ से मुराद ह़ौज़े कौसर की वोह नहर है जो मैदाने ह़श्र में होगी अस्ल ह़ौज़े कौसर तो जन्नत में है ह़श्र में प्यासे पानी पियेंगे हुज़ूर अपने एहतिमाम से उन्हें पिलाएंगे यहां वोही मौजूदगी मुराद है।

(6) इस ह़दीस के मु-तअ़ल्लिक़ चार बातें ख़याल में रखो एक येह कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुसूसी शफ़ाअ़त के अवक़ात में इन तीन जगहों में होंगे वरना उ़मूमी शफ़ाअ़त की जगह तो मक़ामे मह़मूद है रब

عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है عَسٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَکَ رَبُّکَ مَقَامًا مَّحۡمُوۡدًا हाकिम का मक़ाम मुक़द्दमात के वक़्त कचहरी होता है खाने वग़ैरा के वक़्त घर नमाज़ के वक़्त मस्जिद लिहाज़ा येह ह़दीस न तो क़ुरआने मजीद के ख़िलाफ़ है न दूसरी अह़ादीस के, दूसरा येह कि यहां इन तीन मक़ामों का ज़िक्र वहां की तरतीब के मुताबिक़ नहीं क्यूं कि मीज़ान पहले हौज़ की नहर इस के आगे पुल सिरात़ उस के आगे, तीसरा येह कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से हमारे नेक अ़मल ऐसे भारी हो जाएंगे जैसे रूई पानी में भिगो कर वज़्नी हो जाती है, चौथा येह कि येह ह़दीस उस ह़दीसे आ़इशा के ख़िलाफ़ नहीं कि ह़ुज़ूर ने फ़रमाया इन तीन मक़ामात पर कोई किसी को याद न करेगा वहां आ़म शोहरों का ज़िक्र है न कि ह़ुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 458 ता 460)

(21) अरकाने इस्लाम

عَنِ ابْنِ عُمَرَ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بُنِیَ الْإِسْلَامُ عَلَی خَمْسٍ شَہَادَۃِ أَنْ لَّا إِلٰہَ إِلَّا اللّٰہُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ وَإِقَامِ الصَّلَاۃِ وَإِیْتَاءِ الزَّکَاۃِ وَالْحَجِّ وَصَوْمِ رَمَضَانَ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल ईमान, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 4, जि. 1, स. 21)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाते हैं कि फ़रमाया (नबिय्यल्लाह) عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने इस्लाम पांच चीज़ों पर क़ाइम किया गया[1] इस की गवाही कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ उस के बन्दे और रसूल हैं[2] और नमाज़ क़ाइम करना[3] ज़कात देना और ह़ज करना और र-मज़ान के रोज़े।

वज़ाह़त :

या'नी इस्लाम मिस्ले ख़ैमा या छत है और येह पांच अरकान इस के पांच सुतूनों की त़रह़ कि जो कोई इन में से किसी एक का इन्कार करेगा वोह इस्लाम से ख़ारिज होगा और उस का इस्लाम मुन्हदिम हो जावेगा। ख़याल रहे कि इन आ'माल पर कमाले ईमान मौक़ूफ़ है और इन के मानने पर नफ़्से ईमान मौक़ूफ़ लिहाज़ा जो सह़ीहुल अ़क़ीदा मुसल्मान कभी कलिमा न पढ़े या नमाज़ रोज़ा का पाबन्द न हो वोह अगर्चे मोमिन तो है मगर कामिल नहीं और जो इन में से किसी का इन्कार करे वोह काफ़िर है लिहाज़ा ह़दीस पर कोई ए'तिराज़ नहीं न आ'माल ईमान के अज्ज़ा हैं।

(1) इस से सारे अ़क़ाइदे इस्लामिया मुराद हैं जो किसी अ़क़ीदे का मुन्किर है वोह हुज़ूर की रिसालत ही का मुन्किर है हुज़ूर को रसूल मानने के येह मा'ना हैं कि आप की हर बात को माना जावे।

(2) हमेशा पढ़ना सह़ीह़ पढ़ना दिल लगा कर पढ़ना नमाज़ क़ाइम करना है।

(3) अगर माल हो तो ज़कात व ह़ज करना फ़र्ज़ है वरना नहीं मगर इन का मानना बहर ह़ाल लाज़िम है नमाज़ हिजरत से पहले मे'राज में फ़र्ज़ हुई ज़कात व रोज़ा सिने दो[2] हिजरी में और ह़ज सिने नौ[9] हिजरी में फ़र्ज़ हुवा।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 28)

(22) निय्यत की अहम्मिय्यत

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّاب قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صلى الله تعالىٰ عليه وآله وسلم

اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ

(मिश्कातुल मसाबीह, मुक़द्दमा अल मुअल्लिफ़, जि. 1, अल ह़दीस : 1, स. 20)

तरजमा :

रिवायत है (ह़ज़रत) उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہ عَنۡہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया नबिय्ये (करीम) صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कि आ'माल निय्यतों से हैं।

वज़ाह़त :

निय्यत इरादए अ़मल को भी कहते हैं और इख़्लास को भी इस सूरत में येह ह़दीस अपने उ़मूम पर है कोई अ़मल इख़्लास के बिग़ैर सवाब का बाइ़स नहीं ख़्वाह इ़बादाते महूज़ा हों जैसे नमाज़ रोज़ा वग़ैरा या इ़बादाते ग़ैर मक़्सूदा जैसे वुज़ू ग़ुस्ल कपड़ा जगह का पाक करना वग़ैरा कि इन पर सवाब इख़्लास से ही मिलता है। सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि इख़्लास और निय्यते ख़ैर ऐसी ने'मतें हैं कि इन के बिग़ैर इ़बादात महज़ आ़दतें बन जाती हैं और इस की ब-र-कत से कुफ़्र शुक्र बन जाता है और गुनाह व मा'सिय्यत इत़ाअ़त। ह़ज़रते अबू उमय्या ज़मीरी ने एक मौक़आ़ पर कुफ़्रिया अल्फ़ाज़ बोल लिये, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ عَنۡہُ ने हिजरत की रात ग़ारे सौर में एक क़िस्म की ख़ुदकुशी कर ली, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہ عَنۡہُ ने खन्दक़ में अ़-मदन नमाज़े अ़स्र छोड़ दी मगर चूंकि निय्यतें ख़ैर थीं इस लिये उन ह़ज़रात के येह काम सवाब का बाइ़स बने।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 22)

(23) अ़क़ीक़े का बयान

عَنْ سَمُرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْغُلَامُ مُرْتَهَنٌ بِعَقِيقَتِهِ تُذْبَحُ عَنْهُ يَوْمَ السَّابِعِ وَيُسَمَّى وَيُحْلَقُ رَأْسُهُ۔

(मिश्कातुल मसाबीह़, کتاب الصید والذبائح ، باب العقیقة ، الفصل الثانی, अल ह़दीस : 4153, जि. 2, स. 87)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते समुरह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने लड़का अपने अ़क़ीक़े में गिरवी होता है[1] सातवें दिन इस की त़रफ़ से ज़ब्ह़ किया जाए और नाम रखा जाए इस का सर मुंडवाया जाए।[2]

वज़ाह़त :

(1) या'नी बच्चा दुन्यावी आफ़ात व मुसीबतों के हाथों में ऐसा गरिफ़्तार होता है जैसे गिरवी चीज़ क़र्ज़ के क़ब्ज़े में क़ैद होती है कि उस से मालिक नफ़्अ़ ह़ासिल नहीं कर सकता या येह मुराद है कि बच्चे की शफ़ाअ़त अपने बाप वग़ैरहुम के लिये अ़क़ीक़े पर मौक़ूफ़ है कि अगर बिग़ैर अ़क़ीक़ा फ़ौत हो गया तो मुम्किन है कि मां बाप की शफ़ाअ़त न करे। ख़याल रहे कि यहां मुर-तहन ब मा'ना रहन या मरहून से है।

(2) या'नी बच्चे की विलादत के सातवें दिन येह तीन काम किये जाएं उस का नाम रखना, सर मुंडवाना उस्तरे से और जानवर ज़ब्ह़ करना सुन्नत येही है और अगर सातवें दिन न हो सके तो पन्दरहवें दिन या जब कभी भी अ़क़ीक़ा हो सके तो सातवें दिन का ह़िसाब लगाया जाए कि जब भी अ़क़ीक़ा किया जाए उस की पैदाइश से एक दिन पहले किया जाए म-सलन बच्चा जुमुआ़ के दिन पैदा हुवा है तो जब भी अ़क़ीक़ा किया जाए जुमा'रात को किया जाए।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 4 ता 5)

(24) ह़या की फ़ज़ीलत

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْأَنْصَارِ وَهُوَ يَعِظُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الْإِيمَانِ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल आदाब, كتاب الاداب، باب الرفق والحياء......الخ، الفصل الاول, अल ह़दीस : 5070, जि. 2, स. 228)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا) से कि रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ एक अन्सारी शख़्स पर गुज़रे जो अपने भाई को शर्मो ह़या के मु-तअ़ल्लिक़ नसीह़त कर रहा था[1] तो रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया इसे छोड़ दो[2] क्यूं कि ह़या ईमान से है।[3]

वज़ाह़त :

(1) उस से कह रहा था तू बहुत शर्मीला है इतनी शर्म मत किया कर क्यूं कि बहुत शर्मीला आदमी दुन्या कमा नहीं सकता यहां वा'ज़ से मुराद डरा कर नसीह़त करना है।

(2) या'नी इसे ह़या और ग़ैरत से न रोको इसे शर्मीला रहने दो।

(3) ख़याल रहे जो ह़या गुनाहों से रोक दे वोह तक़्वा की अस्ल है और जो ग़ैरत व ह़या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दों की हैबत दिल में पैदा कर दे वोह ईमान का रुक्ने आ'ला है और जो ह़या नेक आ'माल से रोक दे वोह बुरी है। बा'ज़ लोग कहते हैं कि हम को नमाज़ पढ़ने से शर्म लगती है येह ह़या नहीं बे वुक़ूफ़ी है यहां पहले या दूसरे

द-रजे की ह़या मुराद है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे दिलों में अपना ख़ौफ़ अपने ह़बीब (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ग़ैरत नसीब करे। आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं

दिन लह्व में खोना तुझे शब सुब्ह़ तक सोना तुझे
शर्मे नबी ख़ौफ़े ख़ुदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 637)

(25) ईफ़ाए अ़हद

عَنۡ عَبۡدِ اللّٰهِ بۡنِ أَبِى الۡحَمۡسَاءِ قَالَ بَايَعۡتُ النَّبِىَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ قَبۡلَ أَنۡ يُّبۡعَثَ وَبَقِيَتۡ لَهٗ بَقِيَّةٌ فَوَعَدۡتُهٗ أَنۡ آتِيَهٗ بِهَا فِى مَكَانِهٖ فَنَسِيۡتُ فَذَكَرۡتُ بَعۡدَ ثَلَاثٍ فَإِذَا هُوَ فِى مَكَانِهٖ فَقَالَ لَقَدۡ شَقَقۡتَ عَلَىَّ أَنَا هَاهُنَا مُنۡذُ ثَلَاثٍ أَنۡتَظِرُكَ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल अदब, बाबुल वअ़्द, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 4880, जि. 2, स. 199)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबिल ह़म्सा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत के जुहूर से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़रीदो फ़रोख़्त की(1) और आप का कुछ बक़ाया रह गया मैं ने वा'दा किया कि मैं इसी जगह वोह चीज़ लाता हूं फिर मैं भूल गया तीन दिन के बा'द मुझे याद आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसी जगह थे(2) फ़रमाया कि तुम ने मुझ पर मशक़्क़त डाल दी मैं तीन दिन से यहीं तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा हूं।

वज़ाहत :

(1) येह बैए मनाबज़ा थी या'नी सामान के इवज़ सामान की इस लिये बाय'तु मफ़ाइला से फ़रमाया येह वाक़िआ़ जुहूरे नुबुव्वत से पहले का है जिस से मा'लूम होता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सदाक़त किस शान की थी और नुबुव्वत के जुहूर से पहले भी कैसे

सच्चे थे।

(2) अ़ब्दुल्लाह ने हुज़ूर से अ़र्ज़ किया था कि आप का बक़ाया इसी जगह पर लाता हूं हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मुझे यहां ही मिलें हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने क़बूल फ़रमा लिया था कि तुम्हें यहीं मिलूंगा येह मिलने का वा'दा हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की त़रफ़ से हुवा था लिहाज़ा ह़दीस वाज़ेह़ है इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि हुज़ूर ने तो कोई वा'दा नहीं किया था।

(3) हुज़ूर (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का यहां ठहरना अपना माल लेने के लिये न था अपना वा'दा पूरा करने के लिये था माल तो उन के घर जा कर भी वुसूल किया जा सकता था, सच और वा'दा पूरा करना तमाम अम्बियाए किराम की सुन्नत है अल्लाह तआ़ला ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के लिये फ़रमाता है وَاِبْرَاهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰى और इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام के लिये फ़रमाता وَكَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 491)

(26) फ़ख़्र की मज़म्मत

عَنْ عِيَاضِ بْنِ حِمَارٍ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِنَّ اللّٰهَ أَوْحٰى إِلَيَّ أَنْ تَوَاضَعُوْا حَتّٰى لَا يَفْخَرَ أَحَدٌ عَلٰى أَحَدٍ وَلَا يَبْغِيْ أَحَدٌ عَلٰى أَحَدٍ ـ

(मिश्कातुल मसाबीह, كتاب الآداب ، فصل اول ،باب المفاخره والعصبيه, अल ह़दीस : 4898, जि. 2, स. 202)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते इ़याज़ इब्ने ह़िमार से कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वह़्य फ़रमाई कि इन्किसार करो ह़त्ता कि कोई किसी पर फ़ख़्र न करे और न कोई किसी पर ज़ुल्म करे।

वज़ाह़त :

इस ह़दीस में ह़त्ता के मा'ना हैं या'नी इ़ज्ज़ व इन्किसार इख़्तियार करो ताकि कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान पर तकब्बुर न करे न माल में न नसब व ख़ानदान में न इ़ज़्ज़त या जथ्थे में और कोई मुसल्मान किसी बन्दे पर ज़ुल्म न करे न मोमिन पर न काफ़िर पर ज़ुल्म सब पर ह़राम है मगर किब्र व फ़ख़्र मुसल्मान पर ह़राम है और कुफ़्फ़ार पर फ़ख़्र करना इ़बादत है कि येह ने'मते ईमान का शुक्र है।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 506 ता 507)

(27) बिदअ़त की ह़क़ीक़त

فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ سَنَّ فِى الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا اَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يَنْقُصَ مِنْ اُجُورِهِمْ شَيْءٌ وَّمَنْ سَنَّ فِى الْإِسْلَامِ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِاَنْ يَنْقُصَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَيْءٌ ـ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल इ़ल्म, फ़स्ले अव्वल, अल ह़दीस : 210, जि.1, स. 61)

तरजमा :

रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया जो इस्लाम में अच्छा त़रीक़ा ईजाद करे उसे अपने अ़मल और उन के अ़मलों का सवाब है जो उस पर कारबन्द हों[1] उन का सवाब कम हुए बिग़ैर और जो इस्लाम में बुरा त़रीक़ा ईजाद करे उस पर अपनी बद अ़मली का गुनाह है और उन की बद अ़मलियों का जो उस के बा'द उन पर कारबन्द हों बिग़ैर इस के उन के गुनाहों से कुछ कम हो ।[2]

वज़ाह़त :

(1) या'नी मूजिदे ख़ैर तमाम अ़मल करने वालों के बराबर अज्र पाएगा लिहाज़ा जिन लोगों ने इ़ल्मे फ़िक़्ह, फ़ने ह़दीस, मीलाद शरीफ़, उ़र्से बुज़ुर्गाने दीन, ज़िक्रे ख़ैर की मजलिसें, इस्लामी मद्रसे, त़रीक़त के सिल्सिले ईजाद किये उन्हें क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा । यहां इस्लाम में अच्छी बिदअ़तें ईजाद करने का ज़िक्र है न कि

छोड़ी हुई सुन्नतें ज़िन्दा करने का इस ह़दीस से बिदअ़ते ह़-सना के ख़ैर होने का आ'ला सुबूत हुवा।

(2) येह ह़दीस उन तमाम अह़ादीस की शर्ह़ है जिन में बिदअ़त की बुराइयां आई साफ़ मा'लूम हुवा कि बिदअ़ते सय्यिआ बुरी है और उन अह़ादीस में येही मुराद है येह ह़दीस बिदअ़त की दो क़िस्में फ़रमा रही है बिदअ़ते ह़-सना और सय्यिआ। इस में किसी क़िस्म की तावील नहीं हो सकती उन लोगों पर अफ़्सोस है जो इस ह़दीस से आंखें बन्द कर के हर बिदअ़त को बुरा कहते हैं ह़ालां कि ख़ुद हज़ारों बिदअ़तें करते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 197)

(28) दुआए बा'दे नमाज़े जनाज़ा का हुक्म

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰه صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَى الْمَيِّتِ فَاَخْلِصُوْا لَهُ الدُّعَاءَ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल जनाइज़, अल फ़स्लुस्सानी, अल ह़दीस : 1674, जि. 1, स. 319)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते हैं फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने जब तुम मय्यित पर नमाज़ पढ़ लो तो उस के लिये ख़ुलूसे दिल से दुआ़ करो।

वज़ाह़त :

इस ह़दीस के दो मा'ना हो सकते हैं एक येह कि नमाज़े जनाज़ा में ख़ालिस दुआ़ ही करो तिलावते क़ुरआन न करो ह़म्दो सना दुरूद व दुआ़ के मुक़द्दमात में से है इस सूरत में येह ह़दीस इमामे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की दलील है कि नमाज़े जनाज़ा में तिलावते क़ुरआन ना जाइज़ है दूसरा येह कि जब तुम नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुको तो मय्यित के लिये ख़ुलूसे दिल से दुआ़ मांगो इस सूरत में दुआ़ बा'दे नमाज़े जनाज़ा का सुबूत होगा ख़याल रहे कि दुआ़ बा'दे नमाज़े जनाज़ा सुन्नते रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ भी है सुन्नते सह़ाबा भी चुनान्चे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने शाहे ह़ब्शा नज्जाशी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और बा'द में दुआ़ मांगी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम एक जनाज़े में पहुंचे नमाज़ हो चुकी थी तो आप ने ह़ाज़िरीन से फ़रमाया नमाज़ तो पढ़ चुके मेरे साथ मिल कर दुआ़ तो कर लो। जिन फ़ु-क़हा ने इस दुआ़ से मन्अ़ किया है उस की सूरत येह है कि सलाम के बा'द यूंही खड़े खड़े दुआ़ मांगी जाए जिस से आने वालों को नमाज़ का धोका हो या बहुत लम्बी दुआ़एं मांगी जाएं जिस से बिला वजह दफ़्न में बहुत देर हो जाए।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 479 ता 480)

(29) ग़ीबत की बुराई

عَنْ أَبِی هُرَیْرَةَ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَتَدْرُوْنَ مَا الْغِيبَةُ قَالُوْا اللّٰهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ قِيلَ أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِیْ أَخِیْ مَا أَقُوْلُ قَالَ إِنْ كَانَ فِيهِ مَا تَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ وَإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيهِ مَاتَقُوْلُ فَقَدْ بَهَّتَهُ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल अदब, बाब हिफ़्ज़ुल्लिसान....अल्ख, अल फ़स्लुल अव्वल, अल ह़दीस : 4828, जि. 2, स. 192)

तरजमा :

रिवायत है ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने क्या जानते हो ग़ीबत क्या है ?[1] सब ने अ़र्ज़ किया अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ही ख़ूब जानें । फ़रमाया तुम्हारा अपने भाई का ना पसन्दीदा ज़िक्र करना ।[2] अ़र्ज़ किया गया फ़रमाइये तो अगर मेरे भाई में वोह ऐ़ब हो जो मैं कहता हूं ?[3] फ़रमाया अगर उस में हो जो तू कहता है तो तूने उस की ग़ीबत की और अगर उस में वोह न हो जो तू कहता है तो तूने उस पर बोहतान लगाया ।[4]

वज़ाह़त :

(1) क़ुरआने मजीद में है **لَا یَغْتَبْ بَعْضُکُمْ بَعْضًا** या'नी बा'ज़ मुसल्मान बा'ज़ की ग़ीबत न करें क्या जानते हो ग़ीबत क्या है और इस की तफ़्सीर क्या है ।

(2) या'नी किसी के ख़ुफ़्या ऐ़ब उस के पसे पुश्त बयान करना । ऐ़ब ख़्वाह जिस्मानी हो या नफ़्सानी दुन्यावी हो या दीनी या उस की

औलाद के या बीवी के या घर के ख़्वाह ज़बान से बयान करो या क़लम से या इशारे से ग़रज़ किसी त़रह़ से लोगों को समझा दो ह़त्ता कि किसी लंगड़े या हकले की पसे पुश्त नक़्ल करना लंगड़ा कर चलना हकला कर बोलना सब कुछ ग़ीबत से है येह फ़रमान बहुत वसीअ़ है।

(3) साइल ग़ीबत और बोहतान में फ़र्क़ न कर सके वोह समझे कि किसी को झूटा बोहतान लगाना ग़ीबत है इस लिये उन्हों ने येह सुवाल किया वोह **وما یکرہ** के लफ़्ज़ से धोका खा गए।

(4) سُبْحٰنَ اللّٰہ क्या नफ़ीस जवाब है कि ग़ीबत सच्चे ऐ़ब बयान करने को कहते हैं बोहतान झूटे ऐ़ब बयान करने को, ग़ीबत होती है सच मगर है ह़राम, अक्सर गालियां सच्ची होती हैं मगर हैं बे ह़याई व ह़राम सच हमेशा ह़लाल नहीं होता ख़ुलासा येह है कि ग़ीबत एक गुनाह है बोहतान दो गुनाह।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 456)

(30) अ़लामाते मुनाफ़िक़

عَنْ أَبِیْ هُرَیْرَةَ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ آیَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ

(मिश्कातुल मसाबीह़, किताबुल ईमान, बाबुल कबाइर व अ़लामातिन्निफ़ाक़, अल ह़दीस : 55, जि. 1, स. 31)

तरजमा :

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं जब बात करे झूट बोले जब वा'दा करे ख़िलाफ़ी करे जब उस के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत करे।

वज़ाह़त :

इस ह़दीस में मुनाफ़िक़ की तीन ऐसी अ़लामतें बयान की गईं जिन का तअ़ल्लुक़ क़ौल अ़मल निय्यत में से एक एक से है, किज़्ब फ़सादे क़ौल है, ख़ियानत फ़सादे अ़मल है और वा'दा ख़िलाफ़ी फ़सादे निय्यत है। जो मुनाफ़िक़ होगा उस में येह तीन बातें ज़रूर होंगी लेकिन येह ज़रूरी नहीं कि जिस में येह तीन बातें पाई जाएं वोह मुनाफ़िक़ भी ज़रूर हो जैसे कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन। इस लिये अगर किसी मुसल्मान में येह बातें पाई जाएं उसे मुनाफ़िक़ कहना जाइज़ नहीं, हां येह कह सकते हैं कि इस में निफ़ाक़ की अ़लामत है।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 348)

म-दनी माहोल अपना लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

गुनाहों से बचने और नेक बनने के लिये तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ! म-दनी माह़ोल की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का हि़स्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिरकत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से अपने साबिक़ा त़र्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत के लिये बेचैन हो जाएगा जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सफ़र करने के नतीजे में ज़बान पर फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, येह तिलावते कुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दी बन जाएगी, गुसीला पन रुख़्सत हो जाएगा और इस की जगह नरमी ले लेगी, बे सब्री की आ़दत तर्क कर के साबिर व शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की आ़दते बद निकल जाएगी और हुस्ने ज़न की आ़दत बनेगी, तकब्बुर से जान छूट जाएगी और एह़तिरामे मुस्लिम का जज़्बा मिलेगा, दुन्यावी मालो दौलत की लालच से पीछा छूटेगा और नेकियों की ह़िर्स मिलेगी, अल ग़रज़ बार बार राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

म-दनी क़ाफ़िले की बहार :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मशहूरे ज़माना तालीफ़ ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल के सफ़ह़ा 1370 पर लिखते हैं :

शाहदरा (मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है, मैं अपने वालिदैन का इकलौता बेटा था, ज़ियादा लाड प्यार ने मुझे ह़द द-रजा **ढीट** और मां बाप का सख़्त ना फ़रमान बना दिया था, रात गए तक आवारा गर्दी करता और सुब्ह़ देर तक सोया रहता। मां बाप समझाते तो उन को झाड़ देता। वोह बेचारे बा'ज़ अवक़ात रो पड़ते। दुआ़एं मांगते मांगते मां की पलकें भीग जातीं। उस अ़ज़ीम लम्ह़े पर लाखों सलाम जिस ''लम्ह़े'' में मुझे **दा'वते इस्लामी** वाले एक आ़शिक़े रसूल से मुलाक़ात की सआ़दत मिली और उस ने मह़ब्बत और प्यार से **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझ पापी व बदकार को म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के लिये तय्यार किया। चुनान्चे मैं **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह तीन[3] दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** का मुसाफ़िर बन गया। न जाने उन आ़शिक़ाने रसूल ने तीन[3] दिन के अन्दर क्या घोल कर पिला दिया कि मुझ जैसे ढीट इन्सान का **पत्थर नुमा** दिल जो मां बाप के आंसूओं से भी न पिघलता था मोम बन गया, मेरे क़ल्ब में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं म-दनी क़ाफ़िले से **नमाज़ी** बन कर लौटा। घर आ कर मैं ने सलाम किया, वालिद साह़िब की दस्त बोसी की और **अम्मी जान** के क़दम चूमे। घर वाले ह़ैरान थे ! इस को क्या हो गया है कि कल तक जो किसी की बात सुनने के लिये तय्यार नहीं था वोह आज इतना बा अदब बन गया है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **म-दनी क़ाफ़िले** में **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने मुझे यकसर बदल कर रख दिया और येह बयान देते वक़्त मुझ साबिक़ा बे नमाज़ी को मुसल्मानों को नमाज़े **फ़ज्र** के लिये जगाने की या'नी **सदाए मदीना** लगाने की ज़िम्मादारी मिली हुई है। (**दा'वते इस्लामी**

के म-दनी माहोल में मुसल्मानों को नमाज़े **फ़ज्र** के लिये उठाने को सदाए मदीना लगाना कहते हैं)

गर्चे आ'माले बद, और अफ़्आले बद ने है रुस्वा किया, क़ाफ़िले में चलो
कर सफ़र आओगे, तुम सुधर जाओगे मांगो चल कर दुआ, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत ने किस त़रह़ एक बे नमाज़ी नौ जवान को दूसरों को नमाज़ की दा'वत देने वाला बना दिया ! इस में कोई शक नहीं कि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है, अच्छी सोह़बत अच्छा और बुरी सोह़बत बुरा बनाती है । लिहाज़ा हमेशा **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत इख़्तियार करनी चाहिये ।

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 1370)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इ़बादात व अख़्लाक़ियात के तअ़ल्लुक़ से अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83 और म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 **म-दनी इन्आ़मात** सुवालात की सूरत में मुरत्तब किये हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को अपना लेने के बा'द नेक बनने की राह में ह़ाइल रुकावटें अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़्रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनता है । हम सब को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से म-दनी इन्आ़मात का कार्ड ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए कार्ड पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात

के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें।

रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने का इन्आ़म :

एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मुझे **म-दनी इन्आ़मात** से प्यार है और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** करने का मेरा मा'मूल है। एक बार मैं तब्लीग़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के म-दनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सूबए बलूचिस्तान (पाकिस्तान) के सफ़र पर था। इसी दौरान मुझ गुनहगार पर बाबे करम खुल गया। हुवा यूं कि रात को जब सोया तो क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, **जनाबे रिसालत मआब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए, अभी जल्वों में गुम था कि लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हैं मैं उन्हें अपने साथ जन्नत में ले जाऊंगा।**

शुक्रिया क्यूंकर अदा हो आप का या मुस्त़फ़ा
कि पड़ोसी ख़ुल्द में अपना बनाया शुक्रिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, फ़ैज़ाने लै-लतुल क़द्र, जि. 1, स. 931)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए म-दनी इन्आ़मात का कार्ड पुर करने और हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बख़्शिश फ़रमा।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुता-लआ कुतुब

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ علیہ)

(1) करन्सी नोट के मसाइल (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिमि फ़ीह़कामि क़िरत़ासिद्दराहिम)(कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (अल याक़ूततुल वासित़ा)(कुल सफ़ह़ात:60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात:74)

(4) मुआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तश्रीह़ तदबीरे इस्लाह़ व नजात व इस्लाह़ (कुल सफ़ह़ात:41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त (मक़ालुल उ़रफ़ाए बि एअ़ज़ाज़े शरए़ वल उ़लमाए) (कुल सफ़ह़ात:57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ु इस्बाते हिलाल) (कुल सफ़ह़ात:63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारुल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात:100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा? (विशाहुल जीद फी तहलीलि मुआ-न-कतिल ईद) (कुल सफहात: 55)

(9) राहे खुदा में खर्च करने के फजाइल (रद्दुल कह़ति वल वबा-इ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-कराअ) (कुल सफहात: 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (अल हुक़ूक़ लि तर्हिल उक़ूक़) (कुल सफहात:125)

(11) दुआ के फजाइल (अह्सनुल विआ-इ लि आदाबिदुआ मअहू जैलुल मुद्दआ लि अह्सनुल विआअ) (कुल सफ्हात:140)

(शाएअ होने वाली अ-रबी कुतुब)

अज इमामे सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अहमद रजा खान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

(12) किफ्लुल फकीहिल फाहिम (सफहात: 74) (13) तम्हीदुल ईमान. (कुल सफहात: 77) (14) अल इजाजातुल मय्यिनह (कुल सफहात: 62) (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफहात:60) (16) अल फद्लुल मव्हबी (कुल सफहात:46) (17) अजलल इ'लाम (कुल सफहात: 70) (18) अज्जम-ज-मतुल क-मरिय्य (कुल सफहात:93) (19)जद्दुल मुम्तारे अ़ला रद्दिल मुह्तार (अल मुजल्लिद अल अव्वल वस्सानी) (कुल सफ़्ह़ात: 570,672)

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब)

(20) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात:160) (21) इन्फ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात:200)

(22) तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात:33) (23) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात:164)

(24) इम्तिह़ान की तैयारी कैसे करें (कुल सफ़ह़ात:32) (25) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात:37)

(26) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात:152) (27) कामियाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात:43)

(28) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्ह़ात:196) (29) कामियाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्ह़ात: तक़रीबन 63)

(30) फ़ैज़ाने एह्याउल उ़लूम (कुल सफ़्हात:325) (31) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात:96)

(32) ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात:50) (33) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़्हात:142)

(34) अरबईन ह़नफ़िय्या (कुल सफ़्हात:112) (35) अ़त्तारी जिन का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात:24)

(36) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात:30) (37) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात:124)

(38) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात:48) (39) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से (कुल सफ़्हात:275)

(40) टीवी और मूवी (कुल सफ़्हात:32) (41 ता 47) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(48) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्हात:24) (49) ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के ह़ालात (कुल सफ़्हात:106)

(50) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात:100) (51) रहनुमाए जद्वल बराए म-दनी क़ाफ़िलात (कुल सफ़्हात:255)

(52) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात:24)

(53) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात:68) (54) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्हात:220)

(55) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़्हात:187) (56) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात:62)

(57) अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात:66)

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

(58) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुतजरुर्रबिह़ फ़ी सवाबिल अ़मलिस्सालेह़) (कुल सफ़्हात:743)

(59) शाहराह औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन (कुल सफ़्हात:36)

(60) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़्हात:74)

(61) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मुतअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़्हात:102)

(62) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद) (कुल सफ़्हात:64)

(63) अद दा'वत इलल फ़िक्र (कुल सफ़्हात:148)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(64) ता'रीफ़ाते नह़विय्या (कुल सफ़्हात:45) (65) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात:64)

(66) नुज़्हतुन्नज़र शरहे नुख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात:175) (67) अरबईने नवविय्या (कुल सफ़्हात:121)

(68) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात:79) (69) गुलदस्ता अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात:180)

(70) वक़ायतुन्नह़्व फ़ी शरहे हिदायतुन्नह़्व

(शो'बए तख़्रीज)

(71) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़्हात:208)(72) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात:679)

(73 ता 77) बहारे शरीअ़त (पांच ह़िस्से) (78) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात:108)

(79) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

(80) सह़ाबए किराम رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم का इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात:274)